''रूचि से पढ़ाई पढ़ने वाले स्टूडेन्ट कभी किसी सबजेक्ट में फेल नहीं हो सकते, फेल होना माना फील करना''

ओम् शान्ति। सभी ने बापदादा द्वारा पहले तो दृष्टि प्राप्त की, भले देखा तो आपने इन स्थूल नेत्रों द्वारा लेकिन इन नेत्रों में भी बाप की दृष्टि पड़ने से यह दृष्टि भी परिवर्तन हो जाती है। सभी को सारी सभा में कौन दिखाई देते हैं? सभी नम्बरवार ब्राह्मण दिखाई देते हैं। थोड़ा बहुत बीच-बीच में मिक्स तो होता है लेकिन सभी की बुद्धि में बापदादा ही है। हर एक यही सोचते हैं हमारा बाबा आ गया। सभी की बुद्धि में मेरा बाबा, मेरा बाबा आ गया। हर एक के नयनों में यही खुशी की झलक समा गई हैं, मेरा बाबा आ गया। सबके नयनों में कौन? मेरा बाबा। नयनों में भी बाबा दिखाई देता, बुद्धि में भी बाबा ही दिखाई देता इसीलिए आप सबकी आंखों में प्यारा बाबा, मीठा बाबा, मेरा बाबा समा गया है। बाप भी बच्चों को उसी रूप में देखते मेरे बच्चे और बच्चे भी उसी रूप से देख रहे हैं मेरा बाबा। सभी के दिल में क्या दिखाई दे रहा है? मेरा बाबा आ गया। मेरा बाबा, मेरा कहने में कितनी खुशी होती है। मेरा बाबा, भले कितना भी कहें - यह लण्डन के हैं, यह इन्डिया के हैं। कितना भी कहें लेकिन सबसे पहले क्या आता? मेरा बाबा आ गया। बाबा और बच्चे का मिलन हो रहा है। यह मिलन भी विचित्र मिलन है। स्थूल में कोई किस एज़ का है, कोई किस एज़ का है लेकिन कौन है, तो शार्ट में कहेंगे बाप और बच्चे बैठे हैं। चाहे 100 वर्ष वाला हो, चाहे डेढ़ सौ वर्ष वाला हो लेकिन क्या कहेंगे? सब बाबा के बच्चे बैठे हुए हैं। जब यहाँ बैठते हो आके तो परिचय क्या देंगे? भले किस भी रूप में आये हो लेकिन यहाँ आने से किस रूप में बैठते हो? स्टूडेन्ट रूप में। बाबा के आगे स्टूडेन्ट के रूप में बैठे हैं और बाबा के बच्चे पूरे वर्ल्ड के चारों तरफ के कोई न कोई आये हुए हैं। भले कोई किस देश के, कोई किस देश के हैं लेकिन यहाँ बैठे हुए क्या फील कर रहे हो? गॉडली स्टूडेन्ट हैं और टीचर भी कौन है? स्वयं भगवान हमारे लिए विशेष मिलने आये हैं। भगवान हमसे मिलने आये हैं या हम भगवान से मिलने आये हैं। जो भी आये, पहचानते हैं तो क्या कहेंगे? बाबा के पास जा रहे हैं, बाबा के पास जा रहे हैं और हर एक की शक्ल में मिलने की भावना कितनी दिखाई देती है। सभी की शक्ल में बाप और बच्चों के भावना की सूरत है। सभी की शक्ल में कितना प्यार है, वाह बाबा वाह! सबकी दिल यही गीत गा रही है और कितना प्यार, कैसा बाप और बच्चे के रूप में मिलन, आज की सभा में देखो तो और कोई सम्बन्ध नहीं, बाप और बच्चा। चाहे बुजुर्ग हो, चाहे कोई भी सम्बन्ध में हो लेकिन हैं सब स्टूडेन्ट के रूप में। सभी की बुद्धि में स्टूडेन्ट की भावना समाई हुई है। सभी की बुद्धि में एम आबजेक्ट यही है, अनेक देश अनेक आत्मायें, लेकिन इस ब्राह्मण जीवन में सभी स्टूडेन्ट के रूप में हैं। चाहे बुजुर्ग है, चाहे छोटा बच्चा भी है। वह तो है ही बच्चा लेकिन फिर भी स्टडी करने वाले सब स्टूडेन्ट बैठे हैं।

आज बाबा ने यह कहा, आज बाबा ने यह कहा, आज बाबा ने अशरीरी बनने की बात सुनाई, कितनी अच्छी बातें बाबा सुना रहे हैं। सभी के मन में इस समय अपना रूप भी कौन सा दिखाई दे रहा है? स्टूडेन्ट। चाहे बुजुर्ग है, चाहे छोटा है। काम भी वही कर रहे हैं पढ़ाई और इस पढ़ाई में शक्ति कितनी भरी हुई है। हैं कितने साधारण लेकिन पढ़ाई द्वारा क्या बन रहे हैं? कोई से भी पूछेंगे आज क्या पढ़ने आये हो? तो सब कहेंगे हम मनुष्य से देवता बन रहे हैं और कितने प्यार से पढ़ाई पढ़ते हैं। हर एक ऐसे रूचि से पढ़ रहे हैं लेकिन अगर दूसरी बात बीच में आ गई तो मुख्य बात जो चल रही है वह तो मिस हो जायेगी ना। लेकिन देखा गया मैजारिटी मिक्स तो होता है सबमें लेकिन आये सब पढ़ने के लिए हैं, स्टूडेन्ट रूप में और देखा गया है कि जब सभी स्टडी करने के रूप में आते हैं तो इनकी शक्ल से ही लगता है यह कोई बहुत पढ़ाई में बिजी है और इन्हों को पढ़ाने वाला कौन है? वह अगर ध्यान में रहे तब तो बेड़ा पार हो गया। परमात्मा पढ़ाने वाला है, यह कभी सुना है क्या कि परमात्मा पढ़ाता भी है लेकिन इस पढ़ाई में मैजारिटी सब पास हो जाते हैं क्यों? यहाँ का जो टीचर है, ऐसी विधि से पढ़ाता है जो सुना वह जैसे छपाई हो रही है। भूलता नहीं है। सब खुशी खुशी से पढ़ रहे हैं। अभी भी तो देख रहे हैं ना बहुत थोड़े हैं जो कोई न कोई सरकमस्टांश अनुसार आये पढ़ने के लिए हैं लेकिन कहाँ पढ़ाई के बजाए और कोई सबजेक्ट में अटेन्शन चला जाता है। सबको विशेष जो होमवर्क दिया गया है, कई तो अभी भी उसकी तरफ अटेन्शन दे रहे हैं, अब भी वही याद कर रहे हैं। पढ़ाई से प्यार है, लास्ट टाइम तक भी पढ़ाई में अटेन्शन है। ऐसे स्टूडेन्ट हाल में पौने से भी ज्यादा हैं। यह बापदादा देख रहे हैं कि इस क्लास में बैठे हुए स्टूडेन्ट की विशेषता है और कमाल यह है कि पढ़ाई के तरफ अटेन्शन देने वाले हैं। तो आप कौन हो? वह

तो हर एक खुद जानते हैं। लेकिन देखा गया तो अभी के स्टूडेन्ट जो हाज़िर हैं, उन्हों में मैजारिटी पढ़ने के शौकीन हैं। यह देखकरके बाप को भी अच्छा लग रहा है। पढ़ाई के तरफ अटेन्शन अच्छा है। यह रिजल्ट अच्छी है। अभी इसको आगे बढ़ाना है। पढ़ाई में शौक बढ़ाना है। पढ़ने में अटेन्शन देने वाले अच्छे हैं। तो जैसे आज की रिजल्ट में पढ़ाई वाले ज्यादा है और अपनी पढ़ाई शौक से पढ़ रहे हैं। संख्या भी अधिक है। तो देखा गया पढ़ाई पढ़ने वाले भी रूचि वाले हैं और टीचर भी पढ़ाने के शौकीन अच्छे हैं। वह भी हमेशा समझते हैं कि स्टूडेन्ट ज्यादा किसी कारण से फेल न हों, कम मार्क्स न लेवें। यहाँ तो सबने पढ़ाई का फल ले लिया है। सभी पढ़ाई का फल लेने वाले हैं इसीलिए अभी तक बैठे हैं, नहीं तो आधा क्लास तो चला जाता। रूचि की बात होती है, पढ़ाई में रूचि हो तो पढ़ाई छोड़ना बहुत बुरा लगता है। लेकिन देखा गया फिर भी रिजल्ट में यह जो क्लास आया है, इसमें रिजल्ट अनुसार रूचि है पढ़ाई में। ताली बजाओ। पढ़ाई की तरफ अटेन्शन है इसकी बधाई क्योंकि हैं तो स्टूडेन्ट। स्टूडेन्ट और पढ़ाई में रूचि न हो तो यह नहीं शोभता, इसलिए कहा कि सभी स्टूडेन्ट पढ़ाई तरफ अटेन्शन देने वाले हैं। तो जितने हैं उसके अनुसार रिजल्ट अच्छी है इसीलिए इस क्लास को फिर भी कहेंगे पास है और सभी की शक्लें देखो, सभी मुस्करा रहे हैं। हमेशा जो भी करो टाइम तो देते हो ना, चाहे घण्टा हो, चाहे आधा घण्टा हो लेकिन टाइम तो देते हो ना। तो टाइम की वैल्यु है इसलिए आपकी नेचर है जो काम करते होंगे ना, वह पूरा लगाकर ही करते होंगे। तो अभी का क्लास जो है वह अच्छी रिजल्ट देने वाला है और टीचर को कौन से स्टूडेन्ट अच्छे लगते हैं? आप जैसे। भले कहेंगे आज ही हम रेग्युलर हुए हैं लेकिन हुए तो सही ना। रेग्युलर की लिस्ट में आये तो सही ना, एक दिन भी आये। लेकिन यह नहीं सीखना तो एक दिन भी चलेगा, वह तो देखते हैं तो सभी खुश होते हैं। ज्यादा रिजल्ट देख करके खुश होते हैं कि हम भी पास में आ गये। इससे सभी समझ ही गये होंगे। बाकी अटेन्शन देना हमारा फर्ज है क्योंकि देखो टीचर भी मेहनत तो करते हैं ना। तो टीचर्स या स्टूडेन्टस दोनों को ज्यादा पास होने की मुबारक हो, मुबारक हो। अभी कभी भी कोई भी पेपर हो उसमें फेल नहीं होना। यह जो आपको सबक सिखाया, वह यह सिखाया, आज आप पास हो गये हो तो शक्लें देखो और जो फेल हुए हैं वह जैसे कांध नीचे कर लेते, नेचरल हो रहा है। कितना भी चाहें तो भी कांध नीचे हो जाता है। तो जब भी पेपर देने बैठो तो सदा यह दिन याद रखना कि पास होना ही है। टोटल रिजल्ट भी देखी गई, तो हिसाब से भी अच्छी रिजल्ट है। कभी भी जब भी पेपर देने बैठो तो हमेशा यह ध्यान रखना चाहिए कि फेल कभी नहीं होना है। फेल होना माना फील करने वाले। सारा साल आपको याद रहेगा कि मैं फेल हुआ, फेल हुआ इसलिए कायदे अनुसार तो बदली हो जायेगी लेकिन यह संकल्प कभी भी नहीं रखना कि जो हुआ सो अच्छा, कभी फेल, कभी पास तो होंगे ही! हमेशा पास तो नहीं होंगे! लेकिन यह शिक्षा तो सबको मिली कि जो पास हुए इसमें, वह कितने हैं और कितने निकले। वह हाथ उठाओ जो पास हुए। हाथ उठाने वाले कम हैं। सभा के हिसाब से कम हैं। हमेशा जब भी पढ़ाई पढ़ते हैं ना, उसमें यह भी लक्ष्य हो कि मुझे पास होके ही दिखाना है। अभी तक जो भी आप लोग पढ़े हैं। पहली से लेकर अब तक जितना भी दर्जे पढ़े हैं उसमें समझो अभी आठवीं का चल रहा है, तो आप कितने पास हुए? पास कितने होने चाहिए? चलो फुल पास नहीं तो थोड़ा कम, एक दो मार्क्स कम हुआ तो ठीक है लेकिन अगर ज्यादा मार्क्स में फेल हुआ तो ठीक नहीं, इसलिए अभी एम क्या रखेंगे? फेल हुआ तो भी एक ही बात है क्या! आप में से भी कोई समझते हैं कि एक दो मार्क्स से पास हुआ तो यह राइट है, या यह भी चलता है...। लक्ष्य यह रखो कि एक भी क्लास मिस नहीं हो क्योंकि स्टूडेन्ट की सदा एम यही रहती है कि मैं पास हो जाऊं। कोशिश करूंगा नहीं, हो जाऊं।

तो आज सभी ने मेहनत की। कितने परसेन्ट ने हाथ उठाया। हाथ तो उठाया लेकिन पास किस नम्बर तक हुए, वह भी तो देखना है ना। पास तो हो गये लेकिन पास ना के बराबर ही हुए, एक दो नम्बर से या ठीक पास जिसको कहते हैं वह हुए। तो हमेशा यह ध्यान रखो किसी भी बात में पास माना पास। फेल का नम्बर आवे, यह अच्छा नहीं। जरूर कोई ऐसी आदत होगी जिसमें बिजी रहते होंगे। फिर भी कितने लोग बैठे हैं यहाँ, जो पास हुए हैं वह हाथ उठाओ। अच्छे हैं, या आगे आगे ही बैठे हैं पास वाले। अच्छा है, जब पास में हाथ उठाते हैं तो नशा कितना चढ़ता है।

सेवा का टर्न महाराष्ट्र ज़ोन का है, महाराष्ट्र, आंध्र प्रदेश, मुम्बई के 15 हजार आये हैं, बाकी सब 22 हजार आये हैं

महाराष्ट्र, तो बापदादा भी मुबारक देते हैं क्यों! इम्तहान दिया भी यहाँ हैं और यहाँ के पास भी ज्यादा हुए हैं। तो जो पास हुए हैं उन्हों को बहुत-बहुत बधाई। मेहनत की या लक है तो हो गये हैं। मेहनत किया है? जिसने मेहनत किया है वह हाथ उठाओ। मेहनत कम ने की है जितनी रिजल्ट है। लेकिन फिर भी इतने भी निकले हैं तो यह भी बापदादा को अच्छा लग रहा है। आधे से ज्यादा हैं। अच्छा है।

डबल विदेशी 50 देशों से 550 भाई बहिनें आये हैं:- अच्छा है फिर भी इतने तो निकले हैं। पुरुषार्थ फिर भी किया है अच्छा है। अच्छा, इन पास वालों के लिए ताली बजाओ। क्योंकि रिजल्ट मिलने से यह प्रभाव पड़ता है कि यह स्टूडेन्ट कैसे थे। पढ़ने के तरफ रूचि थी या और किसी बात में रूचि थी। फिर भी अच्छा है, (रतन दादा, रत्ना बहन, लण्डन के) एक ही घर में दोनों पास हैं! दोनों ही पास हो गये, यह तो बहुत अच्छा। अच्छा आप सबकी तरफ से बाप ही इनको मुबारक दे रहे हैं, इतने तो बोलेंगे नहीं इसलिए सभा के बीच में ही दे रहे हैं। अच्छा है रिजल्ट मिलने से उमंग आता है, तो इतनी रिजल्ट कम क्यों हुआ। हर एक समझेगा कि हम भी स्टडी करते तो नम्बर लेने में थोड़ा और आगे बढ़ जाते। और कर सकते हैं थोड़े अलबेले रहे हैं, हो जायेगा, हो जायेगा, नहीं। होना ही है।

(तीनों स्थानों पर फूलों का श्रंगार कलकत्ता वालों ने किया है) अच्छा है, कलकत्ते वाले बहुत आये हैं। इनसे यह सीखो कि हम भी इसी लाइन में उठें। ऐसे ही सीखते जायेंगे। अच्छा है जिन्होंने हाथ उठाया उनकी तरफ से इनको 100 गुणा ज्यादा मुबारक है। अच्छा है। सब उमंग उत्साह में हैं तो दूसरी बारी फिर नम्बर और आगे होंगे। एक बारी किया है ना, तो अभी उमंग आ गया कि हम भी हो सकते हैं तो दुबारा फिर जीत जायेंगे। तो कोशिश करना नम्बर और आगे हो।

फर्स्ट टाइम बहुत आये हैं:- आधा क्लास तो है। इतनी सभा में इतने थोड़ों ने हाथ उठाया। अगर थोड़ा और ज्यादा हो जाते तो कितना अच्छा होता। हम तो कहेंगे कि यह बहुत उमंग-उत्साह होना चाहिए। यह नम्बर लेना कोई रिवाजी बात नहीं है। नाम तो हुआ ना। सारी क्लास उनके मित्र सम्बन्धी कितने खुश हुए। वह भी अगर गिनती करें तो कितने होंगे। उनके माँ बाप चाचा चाची कितने खुश होंगे। लेकिन अच्छा है जो आपने नम्बर तो ले लिया। फिर भी नम्बर में तो आ गये ना। यह भी अच्छा है। ना से अच्छा है।

अच्छा, जो पहले नम्बर वाले आये हैं उन सभी को, इतनी सारी सभा को मुबारक।

दादी जानकी से:- आपको देख करके सबको उमंग आयेगा, यह कर सकती हैं तो हम क्यों नहीं कर सकते हैं। (मोहिनी बहन,न्युयार्क ने बहुत याद दी, जयन्ती बहन ने भी बहुत याद दी।) याद दी लेकिन आ नहीं सके। (वहाँ भी 18 जनवरी बहुत प्यार से सभी मनाते हैं)

कलकत्ता वालों ने बापदादा को हार पहनाया:- (मुन्नी बहन को देखकर) आप भी तो कलकत्ता से निकली हो ना।

मोहिनी बहन:- (बाबा आपके वरदानों से ठीक हूँ) अभी आगे भी ठीक रहेंगी। वह तो अच्छा है बाबा सभी को वरदान में हाँ हाँ कहता है, सिर्फ याद रखें।

(मधु बहन 20 साल से 18 जनवरी को तीनों स्थान फूलों से सजाती हैं) इन्होंने कोशिश की है नम्बरवन जाने की। कोशिश में अभी थोड़े नम्बर आये फिर दूसरे आ जायेंगे। कोई बात नहीं। लेकिन उमंग आयेगा कि हम थोड़ा पीछे रह गये हैं।

नारायण दादा से:- अभी और आगे जाकर दिखाओ। जैसे अभी नजदीक आके दिखाया, ऐसे इसमें भी नम्बर आगे जाके दिखाओ। कर सकता है। अभी कोई बुढ़ा नहीं है, जवान है। यह करना चाहे तो कर सकता है। ले सकता है, बस सिर्फ थोड़ा जोश भरना अपने में। (सबका सपोर्ट है) आपकी सपोर्ट है! पहले आपकी सपोर्ट है? पहले आपकी सबको सपोर्ट चाहिए। अच्छा।

''साइंस के साधनों ने मिलन का रास्ता बहुत सहज बना दिया है लेकिन सबसे अच्छी याद दिल की है, दिल में बाबा बाबा याद हो, बाबा ही दिल में समाया हुआ हो''

ओम् शान्ति। सभी बापदादा के लाडले बच्चों को देख बापदादा भी बहुत हर्षित हो रहे हैं क्योंकि हर बच्चा बाप को कितना प्यारा है। हर एक का चेहरा देख बापदादा के मन में एक-एक बच्चे की सूरत में बाप की मूर्त देख बाप को भी कितना हर्ष होता है। जैसे बच्चों की हर शक्ल में बाप को देख बाप हर्षित होते हैं ऐसे ही हर एक भारत या विदेश दोनों तरफ के बच्चों को साकार में सामने देख बाप कितना खुश होता है। वाह हर एक बच्चा वाह! सबके नयन अति न्यारे और प्यारे दिखाई दे रहे हैं क्योंकि हर एक की दिल यही बोल रही है वाह बाबा वाह! जो साकार रूप में बाप और बच्चे का यह मिलन कितना प्यारा लग रहा है। कितने समय के बाद साकार में बापदादा बच्चों को देख और बच्चे भी बाप को देख कितना हर्षित होते हैं। हर एक की दिल में यही गीत बज रहा है वाह बाबा वाह! और बाप के दिल में भी यही गीत है वाह बच्चे वाह! हर एक बच्चे के इन आंखों से साकार वतन में यह मुलाकात कितनी प्यारी है। बच्चों के दिल में वाह बाबा वाह! और बाप के दिल में वाह बच्चे वाह! यह थोड़े समय का मिलन कितना प्यारा है। हर बच्चे के दिल में बाप समाया हुआ है। ऐसे प्रेम स्वरूप हर बच्चा दोनों के दिल में मेरा बाबा और बाप के दिल में मेरे बच्चे। इस घड़ी मैजारिटी हर बच्चे सम्मुख बाप को देख दिल में मुख में मेरा बाबा, यही गीत सुन रहे हैं। हर एक के दिल में मेरा बाबा, भले नम्बरवार हैं लेकिन समाया क्या है? मेरा बाबा। और बाप के दिल में कौन? मेरे बच्चे। इतना सम्मुख मिलन मनाते देख सबकी दिल हर्षित हो रही है। बाप भी एक-एक बच्चे के दिल की याद का फोटो देख देख हर्षित हो रहे हैं, वाह बच्चे वाह! यह मिलन, सम्मुख मिलन, चाहे किसी द्वारा है लेकिन यह मिलन, इस मिलन का अनुभव साधारण नहीं, बाप की दिल में, इतने सब बच्चे बाप के दिल में समाये हुए हैं। बच्चों के दिल से वाह बाबा वाह, और बाप के दिल से वाह बच्चे वाह! हर एक की दिल में, बच्चों के दिल में बाबा, बाबा की दिल में बच्चे। यह दिल का मिलन चित्र के रूप में देखो तो हर एक लव में लीन है। हर एक की दिल क्या कह रही है? मेरा बाबा, मीठा बाबा, प्यारा बाबा और बाबा भी एक-एक बच्चे का प्यार दिल में समाये हुए हैं। भक्ति में ऐसे नहीं सोचा था तो ऐसे प्रभु मिलन हम बच्चों के भाग्य में है लेकिन ड्रामा कहें या तकदीर कहें, हर एक बच्चे के भाग्य को देख बाप को कितनी खुशी होती है। वाह बच्चे वाह! ऐसा मिलन जैसे सम्मुख मिल रहे हैं। तो इसको कहेंगे ऐसे मिलन का मौका मिला हुआ है ड्रामा में। बहुत अच्छा मन आनंद में आ जाता है। भले रूप दूसरा है फिर भी मिलन तो है ना! क्या भासना आती है? बाप मिलने आया है। बच्चे मिलने आये हैं। ऐसा भाग्य साकार रूप में ऐसे मिलेगा यह ड्रामा में नूंधा हुआ है, यह देख कितने हर्षित हो रहे हैं।

अभी बाबा की एक ही हर बच्चे के साथ यही दिल है, हर एक की दिल यही कहती है बच्चा हर एक बाप की दिल में समाये हुए रहें और समाते समाते इतनी खुशी का अनुभव करते हैं, जो करते हुए भी दिल नहीं पूरी होती है। दिल से हर समय यही निकलता है, ऐसा बाबा, कलियुग में ऐसी चीज़ मिले, कितना भाग्य है। परन्तु साइंस वालों को थैंक्स देते हैं जो ऐसा मिलन के रास्ते बनाये हैं जो सम्मुख न होते, सम्मुख का अनुभव कराते हैं। कई बच्चों का अनुभव देख और सुन बाप भी हर्षित होता है। बाप बच्चे को देखकर खुश होते और बाप बच्चे दोनों जब खुश होके मिलते, तो आप अनुभवी हैं और यह साइंस वालों को बापदादा निमित्त बनाने वाले देख दिल ही दिल में उन्हों के भी गीत गाते हैं कि वाह! यह बाप और बच्चे का मिलन सदा होता रहे तो कितना अच्छा है लेकिन ड्रामा में इतना ही है। फिर भी साइंस

ने मिलन का रास्ता बहुत सहज बना दिया है। सामने दिखाई भी देता है, सुनने में भी आता है तो बापदादा भी जब बच्चों को देखते हैं तो कितने खुश हो जाते हैं। लेकिन कलियुग में साधन तो बहुत अच्छा बनाया है फिर भी सामने भासना तो देते हैं ना। कुछ भी, रूबरू की भासना तो हो नहीं सकती लेकिन फिर भी बाबा की शक्ल, नयन, चैन, मिलन यह भी एक संगम का वन्डर है। तो सभी बच्चे खुश हो जाते हैं ना देख करके बात करते, मिलते खुश हो जाते हैं इसलिए कोशिश करते हैं मधुबन चलो, मधुबन चलो। और बाप भी हर बच्चे को देख कितना खुश होता होगा! सारे ड्रामा में यह मिलन भी विचित्र है। तो जब भी ऐसा दिन होता है तब हर बच्चा कोशिश करता है पहुंच जायें। लेकिन कलियुग है, कलियुग में सब सुख नहीं पूर्ण होते हैं। होता है लेकिन जो मनुष्य चाहता है वह सब पूरा नहीं हो सकता। तो बापदादा को भी जब सुनते हैं ऐसे मिलन हो सकता है तो अन्दर कितनी खुशी होती है। बच्चों को तो होती है बाप को भी होती है। हर एक के दिल में बाप की याद तो सदा रहती है कि मुश्किल है? जो समझते हैं कि बाप की याद भूलना मुश्किल है वह हाथ उठाना। भूलना मुश्किल है? फिर क्या करते हो आप? दिल में ही समा देते हो! और कई बच्चे तो देखा है इतना दिल में याद आता है जो चुपचाप बैठे हैं अकेले, लेकिन ऐसे ही बैठे हैं जैसे कोई सामने बात कर रहा है क्योंकि सभी को पता है कि यह मिलन का दिवस बहुत अमूल्य है। फिर भी साइंस वालों को थैंक्स तो देंगे ना। किसी भी साधन द्वारा बाप सामने आ जाएं, शब्द सुनने में आ जाएं, खुशी कितनी होती है। तो जब बापदादा सुनते हैं कि यह साधन मिला है, जो सुन भी सकते और मिल भी सकते हैं तो बाबा के मुख से क्या निकलता है? वाह साइंस वाले बच्चे वाह! जो ऐसे साधन बनाये हैं जिस समय भी दिल हो बाबा को देखें, सुनें तो सुन सकते हैं। जैसे हमारे सामने ही बाबा बैठा है, ऐसे साधन भी बनाये तो हैं ना। लेकिन पहली बात है हमारे दिल में ही इमर्ज हो सकता है, मिलन हो सकता है, यह भी ड्रामा में नूंध है। तो बाबा साइंस वालों को बहुत-बहुत याद करते हैं कि और भी कुछ नजदीक का बनाओ, जिसमें बच्चे भी खुश तो बाप भी खुश। यह बताते हैं तो बच्चे कितना योग लगाके साइंस वालों के पीछे पड़ के इन्वेन्शन निकालते हैं। तो बापदादा भी बच्चों का दिल का याद जो है वह देख बैठ नहीं सकते। कोई न कोई साधन निकलता ही रहता जिससे गरीब भी देख सके, साहूकार भी देख सके और सबसे सहज मिलन दिल का मिलन है।

आज सुबह से उठे तो जब तक बाबा मिले तब तक आपके दर्पण में क्या-क्या आया था? घड़ी-घड़ी अभी जायें बाबा आयेगा, बाबा मुरली चलायेगा। यही याद होगा ना। तो साइंस वालों को भी मुबारक है जो कैसे भी इन्वेन्शन निकाली और यहाँ तक भी पहुंच गये, जो आप बाप के सामने और बाप आपके सामने हो जाता। फिर भी इतना तो हो गया ना। है तो छोटा सा मिलन, लेकिन फिर भी है तो मिलन ना। तो बाप भी याद करते बच्चे भी याद करते लेकिन याद का रेसपान्ड मिलता है तो उसमें कितनी खुशी होती है। याद तो सभी करते हैं, कोई भी होगा ना, अन्जान भी होगा छोटा बच्चा तो भी कहेगा आज फोटो दो तो देखें बाबा कैसे मुरली चलाता है। यह है दिल का लगाव। बस बाबा शब्द कहते, सुनते, देखते बाबा बाबा बाबा, बाबा बच्चे में, बच्चे बाबा में समा जाते हैं। और बच्चे भी कोशिश करके देखो कहाँ-कहाँ से कैसे-कैसे पहुंच जाते हैं। यह बाप और बच्चों का मिलन या आत्मा परमात्मा का मिलन कितना अमूल्य है। इस अमूल्य मिलन के समय को संगमयुग कहा जाता है। इस युग की महिमा करो तो कितना नयन गीले हो जाते हैं। तो बाबा इम्तहान लेंगे, अभी अचानक इम्तहान लेंगे कि सारे दिन में कितना टाइम याद रहता है? क्योंकि बहुत प्यारा है, यह तो सभी कहते हैं। यह कर दें, यह कर दें, वह तो ठीक है, दिल में प्यार तो सभी का है लेकिन कितना समय निकालके याद में बैठते हैं, कैसे बैठते हैं वह तो हर एक की हिस्ट्री खुद जानें या बाप जाने। तो सभी बच्चे ठीक हैं? जिनकी तबियत वगैरा सब ठीक है वह हाथ उठाना। सभी का हाथ भी देखो तो कितना अच्छा लगता है। जब हाल फुल हो जाता है तो कितनी सीन अच्छी लगती है। पहले सबसे अच्छी याद तो दिल की है। दिल में बाबा बाबा ही याद हो, चलते फिरते कुछ भी करते इसलिए बाप की भी दिल नहीं रहती, बच्चों की भी दिल नहीं रहती तो ड्रामा में मिलन का साधन भी अच्छा रखा है। साइंस ने इस समय मिलन का रास्ता बहुत अच्छा बनाया है। छोटी सी कैसेट रख दो जब

चाहे तब आवाज सुनो। तो बाबा कहते हैं साइंस ने भी कमाल की है। सुनने का भी देखने का भी। लेकिन बाप सदा कहता है यह तो अल्पकाल के साधन है लेकिन सदा आपके साथ हो, वह दिल। दिल में बाबा को याद करो और इमर्ज रहे यह प्रैक्टिस जरूरी है। अच्छा। अभी आज कौन सा तरफ आया है।

सेवा का टर्न ईस्टर्न ज़ोन का है। आसाम, बंगाल, बिहार, उड़ीसा, नेपाल और तामिलनाडु ज़ोन के 18 हजार आये हैं, टोटल 23 हजार आये हैं:- अच्छा है साइंस वाले भी अपना उल्हना उतार रहे हैं जो दे सकते हैं, देते हैं। लेकिन सबसे सहज याद करने का तरीका जो है वह याद बिना साधन के दिल में आ जाए, निकालना चाहे तो भी नहीं निकले, साधन इतने हैं जो कमाल साइंस का है और ऐसे टाइम पर साइंस का साधन हुआ है जो बच्चे कहाँ भी हों, विलायत में हों या यहाँ हों, सब साधनों से मिलन मना सकते हैं। तो संगम पर सिर्फ बाप का साथ नहीं मिलता लेकिन साधन जो हैं उनका भी बहुत साथ मिलता है। मिलन के लिए कितने साइंस के साधन हैं। यह संगम पर बाप और बच्चों के मिलन के साधन भी कम नहीं हैं इसीलिए साइंस को भी कहेंगे कि हमारे मिलन के निमित्त साइंस बनी है। भले पैसा चाहिए परन्तु दूर बैठे भी मिलन तो हो सकता है चाहे कुछ भी काम करके पैसा इक्ट्ठा करें, क्या भी करें।

डबल विदेशी 60 देशों से 700 भाई बहिनें आये हैं:- फिर भी यहाँ के वहाँ के मिलाके अच्छा है जो पहुंच गये हैं। बापदादा को तो खुशी होती है कि बच्चे कैसे भी पैसा इकट्ठा करते, एक तो उन्हों की कमाल बहुत अच्छी होती है, बाबा सुनते हैं कैसे पैसा इकट्ठा करते हैं। दूसरा दिल में लगन कितनी है और लगन के साथ साधन भी कैसे इकट्ठे करते हैं, कमाल तो उनकी है क्योंकि पहले तो टिकेट चाहिए। लेकिन बाप ने देखा तो बच्चों की दिल बाप से, बाप की दिल बच्चों से। दिन याद करते रहते हैं, कब मिलन होगा, कब होगा। बच्चों का बाप से और बाप का भी बच्चों से बहुत दिल का प्यार है। बस उन दिनों की तारीख याद करते रहते, कब शुरू होगा। तो सब ठीक हैं? सबकी तबियत ठीक है। बाप को भी बच्चों को देख बहुत खुशी होती है, जितने बच्चे ज्यादा उतनी बाप को खुशी है। सभी को बहुत-बहुत दिल से यादप्यार तो है ही क्योंकि दिल में समाया हुआ कौन है? खास जिस समय यहाँ मुरली चलती है, उस समय भी देखो अपने घरों में भी मुरली के टाइम जब सीजन शुरू होती है तो कैसे भी करके अटेन्शन देके टाइम निकालते हैं। बापदादा भी देखकर हर्षित होते हैं बच्चों की दिल मुरली से कितनी है। खजाना है ना। तो कैसे भी सरकमस्टांश होते भी मुरली सुनने पहुंच जाते हैं। यहाँ भी जो दिल से पहुंचे हैं उन सबका सम्मुख मिलन तो हो गया लेकिन सम्मुख मिलन तो हुआ, अभी इसी मिलन को बढ़ाते जाना। जहाँ तक हो सके वहाँ तक बढ़ाना। यह पुरुषार्थ करते आगे बढ़ते चलो। हाल तो यह भी भर गया है। बाप बच्चों को देख करके खुश होते हैं। जो भी आये हैं उन एक-एक बच्चे को बाप दिल से यादप्यार का रिटर्न यादप्यार दे रहे हैं।

दादी जानकी से:- मेहनत अच्छी की है। प्रकृति से भी अच्छी मेहनत की है। सभी आपको देखकर कितने खुश होते हैं। यह तो अच्छा है जो चलकर फिरकर भी तबियत ठीक है। परन्तु फिर भी आयु के हिसाब से ठीक है। (बेहरीन के इब्राहम भाई की याद बापदादा को दी) अच्छा है एक दो के सहयोगी बनना बहुत अच्छा है। मतलब टोटली जो अभी सेवा चल रही है, अभी ठीक अटेन्शन है। विदेश का असर देश में आता, देश का असर विदेश में हैं। एक दो के मददगार भी हैं।

मोहिनी बहन:- तबियत थोड़ी ढीली है। रेस्ट कर रही है। (आपकी गोद में हूँ) तो वहाँ तो रेस्ट ही है ना। यह सदा ठीक होते ठीक है। अच्छा है।

ईशू दादी से:- (तबियत ठीक नहीं है) घबराना नहीं, घबराने से और ही हो जाता है। जिसके लिए सोचते हैं वह ज्यादा हो जाता है, इसलिए यही सोचो जैसे दवाई हो गई है। बाबा को याद किया, बीमारी की गोली एक बारी ले ली बस। भले जो दवाई है ना, उसको जिस समय लो उस समय समझो यह दवाई हमारे काम में आई। भले धीरे-धीरे आयेगी

लेकिन आपको फर्क महसूस होगा, बस। और सभी को पता है कि इनकी तबियत खराब है तो सभी का ध्यान आपमें जायेगा।

तीनो भाईयों से:- सभी खुश हैं। सब खा पी तो रहे हैं ना। यह तो खाते रहना चाहिए। खाओ पिओ, जरूरत नहीं है टोली नहीं खाओ, समझो मेरी तबियत खराब है। भोग तो सभी को आटोमेटिक मिलता है। भोग तो सबके पास बीमारी में भी पहुंच जाता है। लेकिन ऐसा बेफिक्र नहीं बनना। अच्छा है सम्भाल करो लेकिन ज्यादा नहीं, बीच का जैसे होना चाहिए वैसे। क्योंकि यहाँ तो ढेर हैं ना। एक दो को देखकरके भी एक दो का तीर लगता है। (अभी और संख्या बढ़ेगी) साधन अपनायेंगे, आयेंगे तो यही बढ़ोतरी हो जाती है। कहाँ आयेंगे? यहाँ ही तो आयेंगे। (रहने का साधन तो बढ़ाना पड़ेगा) अभी चल रहा है ना। (बहुत बच्चे बाहर बैठे हैं) उसमें कोई नुकसान तो नहीं है ना।

(रमेश भाई ने कहा बाबा आपको और भी आने के टर्न बढ़ाने होंगे) वह तो देख लेंगे। पहले यहाँ के साधन तो ठीक हो जायें। बच्चे बढ़ेंगे तो साधन भी जरूर बढ़ेंगे ना। भाषण सुनें वह अवस्था तो चाहिए। अगर ठीक प्रबन्ध नहीं होगा तो मुरली क्या सुनेंगे! (बरसात से सेफ्टी के लिए हाल के ऊपर दूसरी छत डाली गई है) अच्छा है, साधन तो चाहिए नहीं तो मुरली के समय बरसात के पानी को ही गिनते रहेंगे इसीलिए सबमें लिमिट चाहिए। साधन चाहिए लेकिन साधन के वशीभूत होके नहीं। यहाँ साधन के बिना तो चल ही नहीं सकते, क्योंकि बरसात ऐसी होती है। अगर ज्ञान की रीति से देखें तो टूमच में नहीं जाना है। साधन यूज़ जरूर करना चाहिए लेकिन हद।

विदेश की बड़ी बहिनों से:- आप लोग अपने शरीर के हिसाब से तो सम्भाल करते ही हो। ऐसे भी नहीं कि शरीर का क्या करें, भोगना तो भोगनी ही पड़ेगी ना। नहीं। अपनी सम्भाल पहले से करो, जब पहले से पता है बीमारी आने की निशानी यह है, उसकी दवाई यह है, वह भी जानते हो। तो पहले सब प्रबन्ध करो। अभी डाक्टर तो छोटे-मोटे सब हो गये हैं, तो शरीर की भी सम्भाल करो। (बाबा से नई वेबसाइट का उद्घाटन कराया) बाकी सब ठीक चल रहा है। अच्छा है। (न्युयार्क की मोहिनी बहन ने सभी की याद दी)

याद तो जरूर दो। वह भी खुश होंगे ना। अच्छा है। (दादी जानकी के लिए) इनकी भी सम्भाल अच्छी करना। (बाबा आपको अगली सीजन में फिर आना है)

(नीलू बहन ने कहा बाबा रथ को पहले ठीक रखना फिर आने का प्रोग्राम देना)

जो ड्रामा में होगा वह होगा, इसीलिए आप सभी अपना विचार भले दे दो लेकिन यह नहीं कहो यह होना चाहिए। नहीं तो इसमें भी फिर जिसमें बाबा आवे वह खुश होते हैं, अगर किसी टर्न में नहीं आता है तो उनके संकल्प चलते हैं, इसलिए यह नहीं चाहती है कि ऐसा हो। सिर्फ एक बात नहीं है, कई बातें हैं। बाबा देखकर उसी अनुसार आपेही करेगा क्योंकि एक की दिल रखो तो वह समझते हैं मैं भी तो हूँ ना। फिर तो सभी खास हैं। हर एक के टर्न में 23-24 हजार होते हैं। (टी.वी. द्वारा लाखों लोग देखते हैं, ज़ोन वाइज जो यहाँ आते हैं, यह प्रोग्राम बहुत अच्छा है) भले वह आयें, उसकी तो छुट्टी है ही। (बाबा मीटिंग के लिए कोई प्रेरणा आप दें, जो रही हुई सेवा कर सकें) आप लोग भी निकालो। (इस वर्ष की थीम क्या रखें) आप आपस में मीटिंग करो, उसमें पहले निकालो फिर बाबा पास करेंगे।

''संगमयुग का भाग्य जिसने प्राप्त किया वह महान योगी है, यह युग परमात्म जन्म, परमात्म मिलन का डायमण्ड युग है जिसमें अलौकिक सुख, शान्ति, श्रेष्ठ जन्म और भाग्यवान परिवार की प्राप्ति होती है''

ओम् शान्ति। सभी के मुखड़े बहुत अच्छा मुस्करा रहे हैं। सभी खुशी-खुशी में बाप का जन्म उत्सव मना रहे हैं। सबके चेहरे बहुत स्नेहयुक्त मीठे-मीठे मुस्कान से, बाप का बर्थ डे बहुत ही स्नेह में मना रहे हैं। बाप बच्चों को मनाते हुए देख खुश हो रहे हैं कि बच्चे बाप और अपने दिव्य जन्म के दिन को मना रहे हैं। आप और अड़ोस पड़ोस के सभी बच्चे बाप के जन्म दिन की, विचित्र दिन की खुशी मना रहे हैं और सबके दिल में इस दिव्य जन्म की, जन्म दिवस की खुशी सबके चेहरे में दिखाई दे रही है। बाप भी बच्चों के इस अलौकिक जन्म के चेहरे देख, बहुत दिल में जन्म दिन की याद से खुश हो रहे हैं कि वाह हर बच्चा जो अपने इस बर्थ राइट को देख हर्षित हो रहे हैं। सभी को यह अलौकिक जन्म कितना प्यारा है, वह हर एक के चेहरे से दिखाई दे रहा है। हर एक को इस जन्म की, इसको कहते हैं अलौकिक जन्म, इसकी बहुत खुशी है क्योंकि यह अलौकिक जन्म कितना सबका न्यारा और प्यारा है। सभी इस एक जन्म में अपना अलौकिक जन्म जान अपने इस दिव्य जन्म को देखते बहुत खुश हो रहे हैं क्योंकि यह जन्म स्वयं ब्रह्मा बाप द्वारा ब्रह्माकुमार ब्रह्माकुमारी के नाम से प्रसिद्ध है। हर एक को इस जन्म की बहुत खुशी है कि वाह मेरा यह अलौकिक सुखमय जन्म है और हर एक के मुख पर इस श्रेष्ठ जन्म की बहुत खुशी चेहरे से दिखाई देती है इसलिए गाया भी जाता है कि यह संगमयुग का जो जन्म ब्रह्मा बाप ने दिया, बाप और आप दोनों का जन्म छोटा है लेकिन प्राप्ति सर्व जन्मों से न्यारी और प्यारी है। हर एक बच्चा अपने इस दिव्य जन्म, अलौकिक जन्म की महिमा भूल नहीं सकता क्योंकि यह छोटा सा जन्म है लेकिन विशेषता यह है जो इस छोटे से जन्म में सारे जन्म की बातें जानते हो और इस एक जन्म में अपना भविष्य भी जानते हो इसलिए संगमयुग को डायमण्ड युग कहा जाता है। परमात्म मिलन, परमात्म जन्म, इस छोटे से युग में अनुभव होता है। सबसे छोटा सा युग है लेकिन प्राप्ति सारे कल्प में इस संगम के जन्म में होती है। अलौकिक सुख, अलौकिक शान्ति और जन्म भी श्रेष्ठ, परिवार भी बहुत भाग्यवान तो ऐसा जन्म इस संगमयुग के एक जन्म का है। बापदादा भी संगम पर ही बच्चों से मिलता है, पहचान से। अलौकिक बाप जिसको ब्रह्मा बाप कहते हैं वह बाप अनुभव में आता है। है छोटा सा युग लेकिन सब जन्मों से यह संगम का युग बहुत-बहुत भाग्यवान है। छोटा सा युग है लेकिन प्राप्ति बहुत है। इतनी प्राप्ति और कोई युग में, जन्म में नहीं होती और साथ-साथ यह संगमयुग ऐसा महान है जो सारे युगों में मुख्य युग यह संगम का गाया हुआ है और संगमयुग में सारे चक्र को जानने का भाग्य प्राप्त होता है। सारे चक्र का जो रहस्य है, वह भी संगमयुग पर ही प्राप्त होता है।

तो आप सभी अभी किस युग में हो? क्या कहेंगे? संगमयुग पर हो ना! जो समझते हैं हम संगमयुग में हैं अभी वह हाथ उठाओ। पीछे का तो देखने में नहीं आता लेकिन आप सुन रहे हो उससे भी जान गये। संगमयुग सब युगों से श्रेष्ठ युग है, छोटा सा है परन्तु भाग्य बहुत बड़ा है। भाग्य संगम का जिसने प्राप्त किया वह महान योगी कहलाता है। यह महान योगी जीवन कितनी महान है! इस संगमयुग की प्राप्ति से, सबसे श्रेष्ठ सतयुग के जन्मों को भगवान द्वारा आप जानते हो। खुद भगवान संगमयुग पर आपको मिलता है। सारे कल्प में अगर सबसे भाग्यवान युग कहलाये तो संगमयुग ही है। ऐसे युग में आपने भगवान के दिव्य जन्म को पाया है। आज भी क्या मनाने आये हो? संगमयुग का जो भाग्यवान समय है वह पाया है, पा रहे हो, पाते रहेंगे। भले सतयुग के देवतायें बहुत श्रेष्ठ हैं लेकिन यह संगम युग की उससे भी ज्यादा बलिहारी है। संगम पर ही भगवान अपने ओरीज्नल बच्चों को प्राप्त होता है। बाप का प्यार प्रत्यक्ष जन्म में संगम पर ही प्राप्त होता है। हर एक के मुख से यही निकलता वाह संगमयुग का दिव्य जन्म! और जन्म दिन को आप भी

मनाते, मन की खुशी का अनुभव करते हो। खुशियां तो बहुत होती हैं लेकिन संगमयुग की खुशियां और उसका गायन संगम पर ही होता है। साथ-साथ संगमयुग की दिव्य प्राप्तियां, वैसे आदमशुमारी तो संगम की बहुत है लेकिन संगमयुग की जो महानता है, वह प्राप्ति का भाग्य आप थोड़े से बच्चों को मिला है। संगमयुग में पहली प्राप्ति, बड़े ते बड़ी प्राप्ति आपको है। स्वयं परमात्मा का अवतरण संगमयुग में ही होता है। संगमयुग के ब्राह्मणों की महिमा बहुत श्रेष्ठ है, जिसमें आप लोग आज बैठे हो यह संगमयुग की प्राप्ति है। सभी कितने खुश हो रहे हैं। संगमयुग और आप, प्राप्ति देखो कितनी ऊंची प्राप्ति, संगमयुग में ही भगवान खुद आके सारा ज्ञान दे रहे हैं। जैसे अभी दे रहा है, इस देन को कम नहीं समझना। डायरेक्ट भगवान संगमयुग पर साधारण रूप में प्रवेश हो दे रहा है। यह भाग्य कम नहीं। यह संगम का एक जन्म महान है। सभी युगों का ज्ञान, सब युगों से श्रेष्ठ कमाई, सारे कल्प का ज्ञान सब संगम पर प्राप्त होता है। आपके पास लिस्ट होगी संगम पर क्या क्या प्राप्त होता है, जो कोई युग में नहीं होता है। तो संगमयुग की प्राप्ति हुई माना सारे कल्प का जो भाग्य है ना, वह यह छोटा सा युग प्राप्त कराता है। तो बाप हर कल्प में यह संगमयुग की प्राप्ति कराते, खास प्राप्ति क्या है? ब्रह्माकुमार और ब्रह्माकुमारी, यह जन्म बहुत श्रेष्ठ है, इसमें आप सारे कल्प का ज्ञान प्राप्त करते हो। तो यह भाग्य संगम पर ही प्राप्त होता है परमात्मा द्वारा। तो बोलो, आप सभी संगमयुग के भाग्य को जान आगे बढ़ रहे हो ना! क्योंकि संगमयुग की महिमा है, जो संगमयुग में ही प्राप्त होता है वह और कहाँ नहीं प्राप्त होता है। तो बापदादा से मिलने आये हो यह भाग्य भी संगम पर मिलता है। यह मिलन कम नहीं है। बहुत बड़ा मिलन है। अच्छा।

बाप के जन्म का यादगार अच्छा रखा है। जो रूबरू आते हैं, वह तो आते ही हैं लेकिन इस प्राप्ति का मूल्य बहुत बड़ा है। बापदादा भी रोज़ ऐसे बच्चों को देख खुश होते हैं वाह कल्प के भाग्यवान बच्चे वाह! स्वयं भगवान भी संगमयुगी ब्राह्मणों की महिमा करते हैं। कितना श्रेष्ठ भाग्य है जो कल्प में एक बार परमात्मा द्वारा प्राप्त होता है। हुआ है ना! जिसको यह भाग्य प्राप्त हुआ है, वह हाथ उठाओ। हुआ है? तो यह भाग्य कम भाग्य नहीं है। सुनने में नम्बरवार जरूर हैं लेकिन यह संगमयुग का भाग्य सारे कल्प के अन्दर फर्स्ट नम्बर है। अच्छा, अभी तो समय बहुत हो गया है।

सेवा का टर्न गुजरात ज़ोन का है, 14 हजार गुजरात के आये हैं, टोटल 22 हजार आये हैं:-

गुजरात वाले आते ठीक हैं। अच्छा है संगमयुग का भाग्य गुजरात ने लिया है। और भी हैं। भिन्न-भिन्न भाग्य, भिन्न-भिन्न देश वालों ने लिया है। थोड़े में सुनाया कि आधे हैं गुजरात वाले। अच्छा है। बोलो। गुजरात से ज्यादा किसका नम्बर है? गुजरात को संग का रंग लगाना चाहिए। अच्छा है। गुजरात ने जैसे नम्बर लिया है वैसे और भी नम्बर ले सकते हैं। भले दो नम्बर हों, लेकिन फिर भी दो नम्बर में आ तो गये। तो बापदादा भी गुजरात को कहता है कि अच्छी मेहनत करते हो और आगे भी करते रहेंगे।

डबल विदेशी 100 देशों से 1200 भाई बहिनें आये हैं:- अच्छा है।

अन्दाज के हिसाब से 1200 अच्छे हैं। साकार बाबा जब थे तब बाबा हमेशा कहते थे कि कोई भी जो भी ज़ोन है, वह ऐसे हाथ उठाते जायें। आते तो बहुत हैं, लेकिन चल रहे हैं और सेवाधारी भी हैं और नाम भी अच्छा बाला किया है। तो यह रिजल्ट बताती है तो अच्छी मेहनत करके बढ़े भी हैं, बढ़ाते भी हैं। हर एक कोशिश कर रहा है आगे बढ़ने की और बढ़ सकते हैं, चांस है।

यह भी मालूम पड़ता है कि गुजरात वृद्धि में अब तक नम्बर आगे गया है। अच्छा है। तो वृद्धि पाना माना अपने ब्राह्मणों की संख्या को बढ़ाना। बाबा को अच्छा लगता है कि जितनी वृद्धि होगी उतना ही जल्दी सतयुग भी आयेगा। कोई नई इन्वेन्शन ऐसी निकालो जो नम्बरवन जैसे गुजरात है उससे भी नम्बर आगे आ जाओ। नम्बर तो आ सकते हो ना। इसमें तो कोई किसको रोक नहीं सकता। लेकिन वृद्धि चाहिए जरूर। क्योंकि सारी दुनिया के हिसाब से अभी हमारे हिसाब में कोई इतना ज्यादा नहीं है। गुजरात जितना अभी आगे गया है उससे भी ज्यादा हो सकता है। जैसे गुजरात ने मेहनत

करके अपने को आगे बढ़ाया है, ऐसे हर एक जो भी हैं, भिन्न भिन्न ज़ोन आये हैं, तो जैसे यह मेहनत कर रहे हैं वृद्धि की, वैसे और भी कर सकते हैं। नम्बर आगे से आगे जाओ। हो तो सकता है ना! जो समझते हैं नहीं, गुजरात से आगे नहीं जा सकते हैं, वह हाथ उठाओ। तो अभी वृद्धि और ज्यादा करो।

दादी जानकी से:- मेहनत बहुत करती हो इनका लक्ष्य है कि गुजरात को आगे करके दिखायेंगे। भले कोई भी करे, उमंग सभी में हैं। अभी सभी समझते हैं कि हम नम्बर आगे जायें तो अच्छा है।

ईशू दादी की याद दी, वह अभी अहमदाबाद में चेकिंग के लिए गई हैं:- बीच-बीच में इसको थोड़ा होता है, लम्बा नहीं जाता है। ठीक हो जाता है।

(तीनों भाईयों ने बापदादा को जन्म दिन की बधाई देते हुए गुलदस्ता भेंट किया)

अच्छा है, सब ठीक चल रहे हैं! उमंग उत्साह में आगे बढ़ रहे हैं। कोई ड्युटी उठावे, इतने महारथी हो तो कोई बीच बीच में उनकी रिजल्ट पूछे। रिजल्ट पूछने से सब बातों का पता पड़ जाता है। अभी पुरुषार्थ तो सब कर रहे हैं इसमें बाबा ने देखा है तो कईयों में उमंग है लेकिन थोड़ा सा उन्हों को बल चाहिए, जो थोड़ा आगे बढ़ें। वह भी हो जायेगा। बाकी हैं सब ठीक। सब ठीक तो हैं ना! थोड़ा होगा तो थोड़ा मौसम का होगा। ठीक है ना सभी! दवा की जरूरत तो नहीं है! हर एक पुरुषार्थ कर रहा है और बापदादा ने देखा कि पुरुषार्थ के बाद कुछ टाइम तो अच्छा चलता है लेकिन थोड़ा ज्यादा टाइम होता है तो फिर और तरफ जाता है इसके लिए जैसे कोई क्लासेज कराते हैं ना, तो उसमें सब मिल करके कोई को मुकरर करो, मास में एक बारी या दो मास में एक बारी आपस में मिल करके यह रिजल्ट निकालें।

बापदादा ने 80 वीं शिवजयन्ती के निमित्त शिव ध्वज फहराया और सबको मुबारक दी।

शिव जयन्ती के दिन पहले तो बाबा याद आता है। शिवबाबा भी और ब्रह्मा बाबा भी और सब बड़ी दादियां भी, सब याद आती हैं। सारी सभा को जो भी सब हैं, सबको जन्म दिन की मुबारक हो।

''हर बच्चे के दिल का प्यार, उनकी स्थिति उनके रूप से (फेस से) दिखाई देता है, हर एक भिन्न-भिन्न सम्बन्ध के प्यार से मिलन मना रहे हैं, मनाते रहेंगे''

ओम् शान्ति। इस चैतन्य दीपकों के संगठन को देख बापदादा बहुत खुश हो रहे हैं। कहाँ-कहाँ से एक-एक दीपक दीपराज से मिलने आये हैं। दीपराज कितने बड़े दीपकों के संगठन को देख खुश हो रहे हैं, वाह दीप वाह! एक दो को देख देख मुस्करा रहे हैं क्योंकि यह मिलन, एक दो साथी आपस में मिलें और कितने समय के बाद मिलते हैं। तो यह मिलन जो है, इस मिलन की बहुत श्रेष्ठ वैल्यु है। वैसे भी आपस में मिलते हैं, बात करते हैं, मुरली सुनते हैं, खाना खाते हैं, रूहरिहान भी करते हैं, लेकिन यह मिलना कितना प्यारा लगता है क्योंकि संगठन ही चलते फिरते दीपराज और दीपराज के बच्चे, दोनों का आपस में मिलना। बच्चे कहते बाबा, ओ बाबा! और बाबा कहते हाँ बच्चे, मीठे बच्चे।

आज तो बाप आपके लिए ही आये हैं इसलिए इसका नाम ही दीपावली रखा है। दीपकों का मिलन। एक-एक दीपक की, अगर आप ध्यान से बैठके टाइम लेके देखो तो हर एक के फेस से कितनी मीठी मीठी बातें मन में आती हैं। एक-एक का फेस बहुत कुछ बातें मन की अभी इस समय दिल में जो भी है वह कईयों की तो बाहर लिखत में दिखाई दे रही है क्योंकि बाप के सामने दिखाई दे वह समय बहुत कम मिलता है। चाहे फारेन हो, चाहे इन्डिया हो लेकिन बाप के दिल में बच्चे, बच्चों के दिल में बाबा। यह मिलन बहुत स्नेह का स्वरूप देखना हो तो मधुबन में देखो। अभी हर एक की दिल में कौन? बाबा के दिल में बच्चे, बच्चों की दिल में बाबा। कितना सुन्दर मिलन है। वैसे तो हर एक बच्चे का मुख अन्दर ही अन्दर मुख में जो बातें कर रहे हैं उनका रिकार्ड तो भर रहा है लेकिन अभी उनके फेस के रिकार्ड में स्पष्ट रूप से आ भी रहा है और मिलन भी हो रहा है। अभी इकट्ठा एक टाइम पर इतनों से तो मिल हीरहे हैं लेकिन यह दिल का मिलन बाप और बच्चे के रूप में, साथी के रूप में, सखा और सखी के रूप में कितना प्यारा है। गीत है ना आपका, तुम्हीं हो माता, तुम्हीं हो पिता....सब कुछ हो। तो आप यहाँ आकरके देखो जिस समय हर एक बच्चे के दिल में यह याद का स्वरूप आता है, आप सोचो तो जब हर एक के चेहरे पर वह मिलन का रूप आता है तो कितना प्यारा लगता होगा! वैसे तो हर एक के दिल में चलते फिरते, कार्य करते भी दिलाराम दिल में दिखाई दे रहा है। लेकिन यह मिलना थोड़े समय का मिलन है यह, लेकिन कितना प्यारा है। हर एक के दिल में विशेष यही है मेरा बाबा। वाह बाबा वाह! आपने हर बच्चे को अपने दिल का कोना दे ही दिया है। हर एक के दिल में देखो अगर ऐसा दिल का नक्शा खींचने वाला हो तो बहुत आपको वन्डर दिखाई देगा - कोई किस रूप में, कोई किस रूप में, एक को ही याद कर रहे हैं।

यह सभा तो छोड़ो लेकिन इस समय चाहे यहाँ चाहे सेन्टर्स पर सभी बच्चों के दिल में कौन दिखाई देता है, मैजॉरिटी। और हर एक की अभी की शक्ल अगर फोटो निकालो तो कितनी खुश दिल है। बाप और बच्चों का यह मिलन दिल को राहत देने वाला है। अगर पूछें किससे भी, आपके दिल में कौन? तो क्या कहेगा? मेरा बाबा। मीठा बाबा। मेरे दिल का दिलवर। और हर एक की शक्ल फोटो निकालो तो शक्ल में फर्क है। हर एक के दिल के आवाज से, हर एक की दिल बोल रही है, वह क्या बोल रही है? है सभी का भाव एक ही लेकिन भिन्न-भिन्न बोल में बोल रहे हैं। सभी की दिल का एक ही आवाज है, दिल का राजा आ गया। हर एक की दिल देखो, कोई ऐसा फोटोग्राफर अभी निकला नहीं है, लेकिन बाप की दिल में हर एक बच्चा कैसे समाया हुआ है, वह सीन अगर आप भी देखो तो देखते ही रह जाओ क्योंकि यहाँ अभी इस समय दिल का अन्दर का नक्शा सबका प्रत्यक्ष रूप में है। अगर एक-एक उस रूप से जो दिल में है, दिखाई देवे तो बहुत आपको आश्चर्य लगेगा, कोई किस रूप में, कोई किस रूप में, किस समय, भिन्न-भिन्न पोज़ में मिलन मना रहे हैं, वह देखने योग्य है। वहाँ ही एक बच्चे के रूप में है तो दूसरा माँ-बाप के रूप में है, सखा रूप में है, भिन्न-भिन्न रूप में है और हर एक अपने रूप के नशे में बहुत लगे हुए हैं। कोई मेरा बाबा कह रहा, तो कोई मेरा दिल का हार, भिन्न-भिन्न रूप से, जो भिन्न-भिन्न सम्बन्ध प्यार के होते हैं ना वह हर एक के दिल के फेस में प्रत्यक्ष दिखाई देता है। तो आप सोचो हर एक के दिल का फोटो प्रत्यक्ष देख बापदादा को कितना अच्छा लगता होगा! इस साधारण रूप

में नहीं लेकिन साधारण रूप के भी दिल में किस रूप से याद कर रहे हैं उसी रूप से दिखाई दे रहा है। तो बोलो, कितना अच्छा लगता होगा! दिल की फोटो, यह फेस तो दिखाई देता ही नहीं है।

तो बापदादा कभी-कभी साकार रूप में इमर्ज हुए, क्लास के रूप में दिखाई देता है, बैठे तो अभी हर एक जो संगमयुग का रूप है उसमें ही हैं लेकिन अगर उसके अन्दर का रूप देखने चाहो तो वह भी स्पष्ट दिखाई देता है। हर एक की दिल खुशी के झूले में झूल रही है। बापदादा भी हर एक का साधारण रूप नहीं देख रहा है लेकिन सम्बन्ध के स्वरूप में बाप और बच्चे के स्वरूप में, ऐसे नहीं इमर्ज करे तो साधारण ही आये लेकिन दिल के प्यार का स्वरूप प्रत्यक्ष है। तो आप देखिये सबके दिल का पूरा-पूरा हाल, अभी इस सभा में दिखाई दे रहा है। तो बापदादा को कितना प्यार, हर एक के दिल का गहरा रूप देख कितना एक-एक के प्रति स्नेह प्रत्यक्ष दिखाई देता है। किसी भी कोने में बैठे हैं, अभी कोना कहाँ और हम कहाँ लेकिन हर एक का चेहरा बापदादा के समीप ही दिखाई देता है। कोई भी चीज़ बड़ा रूप करके देखो सामने और नेचुरल रूप में देखो तो कितना फर्क पड़ता है। तो बापदादा जब भी आते हैं तो आपका वही ओरीज्नल रूप देखते हैं और दिल से क्या निकलता है? वाह बच्चे वाह! थोड़ा सा टाइम सम्मुख का मिलता है, बात तो फिर भी दिल में ही कर सकते हैं लेकिन दिल की बातें दिल में कर लेते हैं, सम्मुख जैसे बात करते हैं तो सम्मुख का जो अनुभव है, खुशी है, दिल का समाना है, यह अनुभव कितना दिल को प्यारा लगता है। भले कोई लास्ट में बैठा है लेकिन दिल में याद जितनी जिसकी पक्की है, वह ऐसे ही महसूस कर रहा है तो बाबा का साथी बनके बैठा हूँ। तो साथीपन और साक्षीपन, दोनों ही रूप दिखाई दे रहे हैं। हर एक के दिल का अनुभव अपना अपना है। कहते तो सभी यह है कि बाबा की याद बहुत अच्छी अनुभव कर रहे हैं लेकिन अनुभव में भी भिन्न-भिन्न रूप हैं। मैजॉरिटी दिल में संगम का रूप ही मिलन में प्यारा लगता है क्योंकि ओरीज्नल फीलिंग आती है। बाप और बच्चे का मिलन बहुत प्यारा लगता है। भले लास्ट में बैठे हैं यहाँ हिसाब से, लेकिन हैं सब दिल में। दिलाराम और बच्चों की दिल, यह मिलन कितना प्यारा है। तो हर एक अभी कहाँ बैठे हो? कुर्सी पर? हर एक अपने प्यार के नम्बर अनुसार उसी जगह पर बैठे हैं। तो बताओ कैसी सभा लगती होगी? हर एक के दिल का चित्र इस समय क्या है? वह चित्र दिल का हर एक का अभी बाहर के रूप में दिखाई दे रहा है। कितनी अच्छी सभा लग रही होगी। हर एक के दिल का चित्र है। सभी का चेहरा बड़ा सुन्दर, काले काले का नहीं, स्नेह में समाये हुए का मेकप हो जाता है तो आप बताओ क्या सभा लगती होगी? तो ऐसी सभा बाप देख सकता है, सेकण्ड में बाप के आगे जो उसकी स्थिति है उसी अनुसार रूप दिखाई देगा। और सभा बहुत सुन्दर लग रही है। कोई गोरा है, कोई काला है क्या है, लेकिन बाबा को लगन वाला वह चित्र ही नज़र आ रहा है। लगन का चित्र बस फेस में ही आप देख लो। हर एक का फेस वर्तमान समय के मन की लगन के स्वरूप का प्रत्यक्ष दिखाई दे रहा है।

बापदादा तो यह देखते हैं कि समय अनुसार माताओं की संख्या कम नहीं आती। वह और ही ज्यादा आती है। चाहे टांग में थोड़ा कुछ भी है लेकिन उन्हों को कोई टांगे स्पेशल मिल जाती हैं। तो बापदादा को ऐसे बच्चों के बीच कितना अच्छा लगता है। वाह! भक्ति में इनको भिन्न-भिन्न रूप में दिखाते हैं। बापदादा भी जब यह दिन आता है तो बच्चों को बहुत एक-एक को देखता है। और बच्चे भी उसी स्नेह के रूप में दिखाई देते हैं। हर एक के दिल से वाह बाबा वाह! वाह बाबा वाह! का गीत सुनाई देता है। और बाप को बच्चों के भिन्न-भिन्न रूप में गीत बहुत अच्छे सुर में सुनाई देता है। कोई कैसा दिखाई दे, कोई कैसा नहीं। एक ही साज़ में, एक ही लगन के रूप में दिखाई दे रहा है। आप सबके चेहरे कुछ तो बदलते हैं, हैं तो वही चेहरे लेकिन जो अन्दर का प्यार का स्वरूप है वह दिखाई दे रहा है। तो बापदादा को भी आने में, बच्चों को ज्यादा तकलीफ होती होगी लेकिन मन की मौज वह और ही जो दूर-दूर से अपने दिल की लगन से आते हैं उनके चेहरे देख बापदादा दिल में ही बात कर लेते हैं।

अभी इतने स्पीकर तो नहीं लग सकते, दिल का स्पीकर लग सकता है। सभी मिल तो लेते हैं ना! सभी कहते हैं भले कुछ भी हो लेकिन मिलते तो हैं ना! आपको क्या लगता है? इतने में सुख आता है? आता है? चाहना तो यही होगी बहुत टाइम हो। लेकिन बापदादा देखते हैं और ड्रामानुसार यही हो सकता है कि बापदादा हर एक

को अपने चाहना अनुसार, क्योंकि चाहना भी इतने सब आप बैठे हो हर एक की चाहना अपनी अपनी होगी। लेकिन प्यार का मिलन चाहे 10 मिनट है, वह 10 मिनट नहीं लगता, एक हिसाब से थोड़ा भी लगता, एक हिसाब से बहुत लगता। तो बापदादा भी एक-एक बच्चे को देख खुश भी होते हैं देखो कहाँ कहाँ-कोने में बैठे हैं। लेकिन यह भी है कि इतने टाइम में भी खुश हो जाते हैं, बाहर से नहीं दिल से क्योंकि और कुछ हो ही नहीं सकता ना! बहुत कोशिश की कि हर एक चाहता है कुछ समय हमको मिले, चाहना तो यह बढ़ती जायेगी यह तो बापदादा भी समझते हैं लेकिन ना से यह भी पसन्द करते हैं। ना से हाँ तो हुई।

आप लोगों को मुश्किल तो नहीं लगती! गर्मी के दिन हैं और गर्मी में आना जाना, माना पहले एक पानी आता है गर्मी का, पीछे मिलन होता है। साधन भी अपनाते हैं लेकिन कलियुग है ना, कलियुग में सब साधन मिलें यह असम्भव हैं। हाँ हम सम्पन्न हो जायेंगे और समाप्ति भी हो जायेगी। लेकिन वह एक मिनट का मिलना भी बहुत प्यारा लगता है। और बाप भी एक दिन में इतने बच्चों से मिल लेता है, तो बाप को भी अच्छा लगता है। ना से तो यह अच्छा है क्योंकि अगर ज्यादा करें तो फिर जैसे ऐसे मिले जैसे दूर से क्योंकि बाबा को भी तो बच्चे प्यारे हैं ना! तो एक के लिए इतनों से मिलना, है तो बहुत मिलने का प्यारा समय लेकिन फिर भी मिलन तो है ना। नाम क्या रखेंगे? बाबा से मिलके आये, चाहे कैसे भी मिलके आये। बापदादा भी समझते हैं कि आजकल के जमाने में गर्मी सर्दी यह अपना आना मिलना यह जैसे चलता आता है वैसे बढ़ता जाता है और चलता रहता है। पहले यह सभायें इतनी बड़ी-बड़ी होती थी! अभी तो कामन लगता है। एक ही सभा में कितने शहर वाले अपने-अपने स्थान से मिलते हैं। अपने स्थान से एक जगह इकट्ठे तो हुए हो ना। फिर भी कोशिश तो करते हैं जितना टाइम यहाँ बाबा के सामने बैठते हो इकट्ठे तो हर एक को अपना साधन भी हो सकता है। बाबा को पसन्द तो आता है कि खुले मैदान में हो लेकिन खुले मैदान में सुनना, समझना यह थोड़ा मुश्किल हो जाता है। अभी जबकि समय अभी नजदीक आ रहा है समाप्ति का लेकिन फिर भी मिलन तो हो जाता है ना। इतना दूर दूर, कितना दूर से मिल रहे हैं। और बाप को भी अच्छा लगता है सिर्फ धैर्य से जैसे प्रोग्राम मिलता है वैसे ही चलें। बाप जब देखता है ना बच्चे थोड़े हलचल में आ गये हैं तो दिल में लगता तो है! लेकिन बाप और बच्चों का मिलन यह छूटता भी नहीं है। तो सभी जो भी अभी आये हैं, कितना कष्ट मिला या नहीं मिला, अच्छा मिला या थोड़ी तकलीफ हुई, बापदादा सभी से मिल रहे हैं। जो थोड़ी बहुत तकलीफ भी हुई होगी तो उसका भी प्रबन्ध होगा तो करेंगे जरूर। हर एक समझता है हम भी मिलके आयें, वह भी प्रबन्ध देखो थोड़ा सर्विस को आगे बढ़ाओ। जो निमित्त बनी हुई आत्मायें हैं उनकी सेवा करके इनको बढ़ा सकते हैं लेकिन हिम्मत वाला चाहिए वह। नहीं तो थोड़ा चार छः पुलिस वाला आयेगा तो दूसरे दिन सभी डरेंगे, इसीलिए ऐसा हंगामा भी नहीं करना है। सरकार नाराज़ नहीं होवे। होती तो फिर भी होगी! परन्तु ऐसा नहीं, सुख के साधन भी हैं। और कौन हैं आपमें जो समझे इस रीति से मिलना जो है वह भी अच्छा है, जो समझते हैं यह भी अच्छा है जो चल रहा है, वह हाथ उठाना। सभी ने उठाया है। आप सोचेंगे और भी अच्छा हो सकता है लेकिन सब कुछ देखना पड़ता है। हमारी देखो, दादी है कितनी एज है। भले इनसे भी बड़े होंगे। क्योंकि आज की सभा में ऐसे बुजुर्ग-बुजुर्ग दिखाई दे रहे हैं। पसन्द है ना आप लोगों को। न चाहते भी पसन्द है। चाहते नहीं हो ऐसे, लेकिन करना ही पड़ता है। और बापदादा समझते हैं कि अपना राज्य जब होगा तब इतने साधन होंगे जो हम यूज़ नहीं कर सकेंगे, इतने होंगे और जब होने चाहिए तब हर एक सोचता है कि अगर यह प्रबन्ध होता तो बहुत अच्छा! और बापदादा से जब बच्चे मिलते हैं तो एक-एक से मिलना तो बहुत मुश्किल है लेकिन सभी से दृष्टि लेते हैं और देते हैं। यह भी अच्छा जो इतने हाल भी आपको मिले हैं! बाप तो मिला ना! चाहे थोड़ी गर्मी सहन करनी पड़ी। या सुनने में थोड़ा कम आया। यह होता है लेकिन यह भी धीरे-धीरे ठीक तो कर रहे हैं और करते भी रहेंगे। लेकिन बाप और बच्चों का मिलना तो है ही कि समझते हो इससे नहीं मिले तो अच्छा! नहीं। बाप को भी तो याद आते हैं ना बच्चे। ऐसे नहीं कि बाप को याद नहीं आते। बाप को भी याद आते हैं, बहुत दिन हुए हैं बच्चे मिले नहीं है, लेकिन देखना पड़ता है। लेकिन जब भी बाबा मिलते हैं बच्चों से तो बहुत प्यारे लगते हैं। थोड़ी गर्मी, पसीना थोड़ा देना पड़ता है लेकिन बाबा के आगे वह क्या चीज़! भक्ति में क्या कुछ करते हैं, यह तो ज्ञान है। आराम तो मिलता है ना। बैठे तो ठीक हो ना

सभी। भले आराम से लेटे हुए नहीं हो लेकिन बैठे तो ठीक हो ना। और ऐसा ही होना चाहिए अगर लेटने का करेंगे तो आधा तो परमधाम में चले जायेंगे। तो बापदादा को भी जब आना होता है ना, तो बहुत नज़ारे सामने आते हैं। यह तो होंगे ही फिर भी प्रकृति भी हम लोगों को अच्छा सहारा देती है। जहाँ बस स्टैण्ड नहीं है ना, वहाँ बस स्टैण्ड बना रहे हैं। जहाँ कहाँ मुश्किल है तो कोशिश कर रहे हैं कि सब ठीक हो जाए। लेकिन चाहिए दिल की लगन और थोड़ा सा बस स्टैण्ड में ठहरना, आयेंगे तो भी दूर बैठेंगे। जैसे अभी लास्ट में जो बैठे हैं उन्हों को क्या दिखाई देगा! लेकिन सब अच्छे ड्रामानुसार मिलन मना रहे हैं और मनाते रहेंगे। पसन्द है ना! इतने बैठे, ऐसे बैठें। तो पसन्द हैं! सोचेंगे इस पर भी। यह झण्डे लहरा रहे हैं, क्योंकि बिचारों को ऐसे थोड़ा आने-जाने में मुश्किल होता होगा ना। फिर भी दिल बड़ी है। जितने गरीब हैं, उतनी दिल बड़ी है। अच्छा। अभी यह भी समाप्ति करनी पड़ती है।

सेवा का टर्न यू.पी. बनारस और पश्चिम नेपाल का है, 13 हजार यू.पी. से आये हैं और टोटल 27 हजार आये हैं:- ज्यादा करके यू.पी. आई है। यहाँ अच्छा दिखाई दे रहा है। हम लोगों ने बहुत मेहनत की आप लोग तो सुखी में आये हो। हम लोगों के दिनों में तो स्कूटर भी नहीं थे। यह धीरे धीरे आये हैं। तो सभी खुश है ना। खुश हैं, खुश होके मिलते रहेंगे।

डबल विदेशी 50 देशों से 900 आये हैं:- तकलीफ तो होती होगी। हम लोगों ने जब शुरू किया तो कैसी हालत थी लेकिन अभी धीरे-धीरे समझ में आ गया। पसन्द है ना यह। यह ऐसे चले तो भी पसन्द है ना! अच्छा। तो सभी समझदार तो हैं ही। समझ सकते हैं, कहने की जरूरत भी नहीं है। जैसा समय महंगाई में बढ़ता जाता है उसी अनुसार प्रबन्ध किया जाता है। अटेन्शन है कि सहज जितना हो सके उतना होवे। लेकिन कोई न कोई कारण आते हैं जिसके कारण थोड़ा पैसा बढ़ाना पड़ता है फिर भी बाबा हमारे साथ है जो हम लोगों को सैलवेशन गवर्मेन्ट भी देती है।

अच्छा है ना, आपको पसन्द है! सब आराम से मिलते भी और मिल करके जायेंगे। घर में जायेंगे तो खाना पीना दोनों टाइम मिलेगा। बाकी जो भी कोई सहूलियत हो सकती है तो अपना विचार दे दो। क्यों नहीं हुआ, क्यों नहीं हुआ! यह जोर नहीं दो। जितना हो सकेगा उतना आपकी बात मानी जायेगी।

दादियों से:- सभी बाबा को कहते हैं कि ऐसा सहज करो जो किसी को मुश्किल नहीं लगे! सभी बाबा कहते हैं और हो जायेगा। (दादी जानकी को अपने पास बिठाया) आप एक का आराम से बैठना माना सबका बैठना। प्रोग्राम तो आप लोग ही बनायेंगे ना। आप ही मालिक हो ना।

(मोहिनी बहन का 75वां जन्म दिन मनाया जा रहा है, मोहिनी बहन ने बापदादा को सुन्दर माला पहनाई, बापदादा ने मोहिनी बहन को माला पहनाई):-

जो भी बना रहे हैं, वह जनरल में भी यूज़ कर रहे हैं। कोई उल्हना आया तो नहीं है। धीरे-धीरे जो भी कठिनाई है ना, वह खत्म करेंगे। अटेन्शन देंगे।

तीनों भाईयों ने बापदादा को गुलदस्ता दिया:- सब ठीक हो। जैसे जैसे मीटिंग करते जाते हो वैसे-वैसे थोड़ा स्पष्ट होता जाता है। (पूना जगदम्बा भवन का प्लैन बापदादा को दिखाया) (बृजमोहन भाई ने सीडी की ओपनिंग कराई)

ईशू बहन से:- तबियत ठीक है ना!

(एस.डी.एम. साहेब और एस.पी. साहेब बापदादा से मिल रहे हैं):- अभी मिल लिये ना। (बहुत अच्छा सहयोग देते हैं) देश का काम है ना। सबको करना चाहिए। देश का काम है कोई ब्रह्माकुमारी पसर्नल नहीं करती हैं।

अच्छा। अभी सभी मिले। अभी आगे चलके भी मिलन होता रहेगा। जैसे प्रोग्राम बनाते हैं वैसे बनाना।

''ओम् शान्ति शब्द के अर्थ स्वरूप में टिककर मन की डांस बढ़ाओ, मन के मौन की आदत डालो तो मुख के आवाज से दूर होते जायेंगे और शान्ति की किरणों से सेवा स्वत: बढ़ती जायेगी''

ओम् शान्ति। यह महावाक्य कितने सभी के प्यारे हैं। भले कुछ भी हो लेकिन ओम् शान्ति शब्द रोने का वायुमण्डल हो, तो भी ओम् शान्ति शब्द हमारे को शान्ति की याद दिलाता है। ओम् शान्ति कहने से ही कैसा भी दृश्य सामने आवे लेकिन ओम् शान्ति का अर्थ अपना ही रूप दिखाता है। ओम् शान्ति कहना स्वत: ही अन्दर शान्ति की लहर फैलाता है। सबके दिल में ओम् शान्ति अपना ही अर्थ फैलाता है। जैसे बाबा शब्द अपना अर्थ फैलाता है, ऐसे ओम् शान्ति के शब्द से अपना ही अर्थ दिल में फैलता है। दिल में फैलाता तो है लेकिन फैलाते हुए उस अर्थ स्वरूप में स्थित हो जाते, सिर्फ कहते नहीं हैं लेकिन चारों ओर देखो तो ओम् शान्ति के अर्थ स्वरूप में मैजारिटी टिके हुए हैं। मैजारिटी के रूप चमक रहे हैं। एक दो को देख, एक दो के संग का रंग चेहरे में चमकता रहता है इसलिए बापदादा भी ओम् शान्ति ही याद दिलाता है। हर एक के मुख में अन्दर ओम् शान्ति का अर्थ दिखाई दे रहा है। हर एक के दिल अन्दर ओम् शान्ति का अर्थ स्वरूप दिखाई दे रहा है। आप सबके दिल अन्दर अर्थ आ गया! हर एक ओम् शान्ति के अर्थ स्वरूप में दिखाई दे रहा है, कोई बोल रहा है, देख रहा है ओम् शान्ति।

अभी भी सभी इस घड़ी ओम् शान्ति के अर्थ स्वरूप में बहुत अर्थ में मगन हैं। तो बाप भी कहते हैं इसी ओम् शान्ति अर्थ में टिकने से, सबकी शक्लें मैजारिटी ओम् शान्ति के अर्थ में मगन हैं। आगे पीछे हाथ क्या उठायें लेकिन मैजारिटी सब इस अर्थ स्वरूप में समाये हुए हैं। सबके मुख से ओम् शान्ति ही निकल रहा है। सभी के दिल में ओम् शान्ति शब्द समाया हुआ है। सभी के मन में यह अर्थ इमर्ज है। सभी उस ओम् शान्ति के अर्थ में मन की डांस कर रहे हैं। भले पांव की डांस नहीं कर रहे हैं लेकिन मन की डांस मैजारिटी कर रहे हैं और यह मन की डांस कितनी प्यारी है। किसी को परेशान नहीं करती। हर एक अपने मन की शान्ति होने के कारण बहुत बाहर से भी शान्त, मन से भी शान्त। ऐसे डबल ओम् शान्ति, बाहर मुख से भी ओम् शान्ति और मन से भी ओम् शान्ति। यह भी एक डांस है। यह मन की डांस है। शान्ति में बैठे कितनी मीठी डांस कर रहे हैं। लेकिन मन की डांस होने के कारण बाहर का आवाज नहीं है। हर एक अपने मन की डांस में बिजी है इसलिए मन का आवाज है लेकिन मुख का आवाज नहीं है। इतने लोग होते भी नजदीक तक कोई आवे तब सुन सकता है क्योंकि मन की डांस मन ही जाने। और इस मन की डांस में इतने बिजी हैं जो इस मन की डांस में बाहर कितने भी बैठे हैं लेकिन मन शान्त है। मन की मस्ती में सब मगन हैं इसलिए यह मन की डांस में बाहर का आवाज नहीं करते लेकिन यह मन की डांस मन में इतने रंग दिखाती जो बहुत प्यारे हैं। यह मन का डांस जब भी होता है तो बाहर की आवाज कुछ नहीं। हर एक इतने बैठे हैं लेकिन आवाज नहीं है क्योंकि मन की डांस में सब बिजी हैं। यह डांस अच्छी लगती है ना। बाहर की डांस तो बहुत ही देखी है लेकिन यह मन की डांस बहुत रमणीक है। इस डांस को ज्यादा बढ़ाओ। मन की डांस जानते हो ना! जानते हो? जो जानते हैं वह हाथ उठाओ। अच्छा, सभी जानते हैं। बहुत अच्छा हाथ भी उठा रहे हैं। तो अभी इस डांस में नम्बर आगे जाओ। यह मन की डांस अच्छी लगती है वा मुख की डांस अच्छी लगती है? अभी आदत डालो मन के डांस की। इसमें ही बिजी रहने से, मन की डांस करने के टाइम यहाँ हाल में कितनी शान्ति हो जाती है। लेकिन यह डांस अभी ज्यादा आवश्यक है क्योंकि दिनप्रतिदिन बाहर का हंगामा तो बढ़ता है, बढ़ना ही है। ऐसे टाइम पर बाहर की डांस या

बाहर की आवाज में आना वह भी अच्छा है लेकिन मन के डांस की प्रैक्टिस बहुत चाहिए। इसकी अन्दर ही अन्दर प्रैक्टिस होनी चाहिए। सारे दिन में इसका टाइम पहले निकालो। हर एक पूरे दिन में दोनों ही डांस का टाइम निकालो और प्रैक्टिस करो। जितना यह डांस करते रहेंगे तो इस डांस से, मन की डांस का प्रभाव, मुख की डांस में भी पड़ता रहता है। तो अभी मन का डांस बढ़ाओ। फिर बहुत रूचि बढ़ती जायेगी। अभी बाप ने देखा तो कईयों का मन की डांस में इन्ट्रेस्ट बढ़ता जाता है और चारों ओर सच्ची शान्ति की अनुभूति हो रही है। कईयों का अनुभव इसमें बहुत अच्छा बढ़ता जा रहा है। यह अभ्यास बढ़ना बहुत फायदे वाला है। जो बाहर मौन का प्रोग्राम बनाते हो तो उसमें भी मन की शान्ति बढ़ती है और मन की शान्ति बढ़ने से आटोमेटिकली मुख का बोल भी कम होने लगा है। तो हर एक को अभी इस समय क्या अटेन्शन देना है! मन के मौन पर। मन का मौन, मन का मौन आप जानते हो! कि इतना नहीं जानते हो? शौक रखो इस पर, मन का मौन बढ़ता जाए। मन का मौन बढ़ने से तन का मौन स्वत: ही बढ़ता जाता है। इसमें आप सभी अपने अन्दर मन का मौन बढ़ाने का पुरुषार्थ प्यार से बढ़ाते चलो। जितना इस तरफ कोशिश करेंगे, रूचि बढ़ेगी तो स्वत: ही मन के मौन होने से आवाज से दूर होते जायेंगे और अन्दर शान्ति की किरणें बढ़ती जायेंगी। तो अभी एक सप्ताह विशेष मन की शान्ति का यह एक सप्ताह मनाओ। मुख की शान्ति घटाओ, मन की शान्ति बढ़ाओ। तो यह ट्रायल करो मन की शान्ति से सब प्रकार की शान्ति बढ़ती जायेगी। अभी एक मास मन की शक्ति को बढ़ाना है। मन की शान्ति बढ़ने से आटोमेटिकली मुख की शक्ति बढ़ती रहेगी। यह प्रैक्टिस सभी को अच्छी लगती है! हाथ उठाओ। अच्छा, हाथ तो सभी ने उठाया है मैजारिटी।

अभी यह मन की शक्ति क्या है! और उसको कैसे बढ़ाना है, यह भी अन्दर ही अन्दर अभ्यास करते रहो, और यह मन की शान्ति का लेसन बढ़ाते रहो। जितनी मन की शान्ति बढ़ेगी उतनी ही मन की शान्ति का प्रभाव मुख की शान्ति पर भी पड़ेगा और जितनी मन की शान्ति बढ़ेगी उतनी मुख की शक्ति बाहर की वह कम होगी। आजकल बीच में बहुत अच्छी यह रेस चली थी, मन की शान्ति सबकी बढ़ गई थी, चाहे मन्सा सोचने की शक्ति, चाहे मुख द्वारा चाहे सूक्ष्म शक्ति बढ़ने के अभ्यास द्वारा जितना बढ़ायेंगे उतना ही शक्ति बढ़ करके मुख की शक्ति कम होगी तो काफी बोल में जो नीचे ऊपर होता है, या बोल के लिए पुरुषार्थ करते हैं वह देखा गया कि कम होता है। तो वह करते चलें, यही बापदादा का कहना है।

सेवा का टर्न, पंजाब और राजस्थान का है, टोटल 22000 आये हैं:- वैसे टोटली अभी जो सबजेक्ट चली है, सेवा और याद, यह दो सबजेक्ट हैं। अभी सेवा को भी बढ़ाना ही है। आप क्या समझते हो, सेवा को बढ़ायें? हाथ उठाओ। सेवा भी जरूरी है। अगर सेवा नहीं करेंगे तो यहाँ वहाँ टाइम ऐसे ही चला जायेगा क्योंकि टाइम तो पास करना ही है और अच्छा टाइम पास करना है, जो आया सो किया, नहीं। कायदे मुजीब जैसे प्रोग्राम मिले उसी अनुसार रिजल्ट निकलनी चाहिए।

रमेश भाई की तबियत ढीली है उन्हें हॉस्पिटल लेकर जा रहे हैं, वह बापदादा से मिल रहे हैं, रमेश भाई ने बापदादा को नई पुस्तकें भेंट की:- ओम् शान्ति। सर्विस का तो चल ही रहा है और सर्विस भी जरूरी है। सर्विस के बिना आप भी फ्री हो जायेंगे ना तो आपको भी और और संकल्प चलेंगे कि कुछ होना चाहिए लेकिन पहले अभी जो सर्विस के प्लैन के बारे में निकला है, तो बापदादा का यही विचार है कि पहले जो सेवा रही हुई है उनको पूरा करो। ऐसे शुरू करते हैं फिर कुछ समय के बाद वह जोश जो है सर्विस करने का

वह कम हो जाता है।

अच्छा है, रमेश आपका विचार तो बढ़िया है लेकिन इसमें करने के समय कुछ विशेष ध्यान भी रखना पड़ेगा, वह थोड़ा आपस में बैठकर इसके बारे में चर्चा करो, तो वह कैसे चलायें और कैसे उसकी वृद्धि हो। ज्यादा टूमच में भी नहीं जाना है और न एकदम कम कर देना है। बीच में चाहिए दोनों तरफ इसलिए पहले एक छोटी मीटिंग करो, उसमें आइडिया बनाओ क्या-क्या करना है, क्या नहीं करना है, वह हर एक अपना विचार देवे उस पर पहले प्लैन बनाओ क्योंकि सर्विस सभी की बढ़ायें या नहीं, यह पता पड़ जायेगा।

डबल विदेशी 75 देशों से 900 आये हैं:- (बापदादा को सर्विस का प्लैन भेजा है, बापदादा उस पर अपने महावाक्य उच्चारण कर रहे हैं) इनका सर्विस का प्लैन बढ़िया है। जितना सर्विस में आगे बढ़ते हैं उतना ही फिर और सबजेक्ट में भी पीछे नहीं रहें। उसका फिर मिलकर प्लैन बनायेंगे तभी फाइनल करेंगे। पहले जिन्होंने सर्विस का प्लैन बनाया है उसको पहले सुनो और उसे फाइनल कर सको तो करो, नहीं तो एडीशन करनी हो तो एडीशन की भी रूपरेखा बताओ फिर उसका सोचकर सर्विस का भी बनाओ और योग का भी बनाओ। यह दोनों टापिक जरूरी है उसको बनाकर फिर यह प्लैन जो है उसको फाइनल करो तो इसमें क्या करना है, क्या नहीं करना है। जो समझते हो कि यह सेवा जरूरी है वह प्लैन बनाके पहले पास कराओ फिर आउट करना। (दादियां बापदादा से मिल रही हैं)

बाबा आपका तो पहले सर्विस भी आपकी, क्योंकि बाबा को शौक है सेवा का। सेवा की तरफ ही अटेन्शन जाता है इसलिए सेवा भी करनी है और साथ में यह जो सेवा है, उसको बढ़ाना भी है। एक तरफ बाबा कहते हैं बढ़ाओ, दूसरे तरफ कहते हैं इतनी सेवा नहीं करो जो सम्भाल नहीं सको। यह भी पहले सिस्टम ठीक करो। सिस्टम ठीक हो जायेगी तो फिर आटोमेटिकली सब डिपार्टमेंट में वह ठीक होगी। लेकिन ध्यान जाए तो एक-एक डिपार्टमेंट को जैसे आप निकालेंगे वैसे ही करना है या कुछ एड करना है या कट करना है। वह भी पहले फाइनल करना है।

विदेश की बड़ी बहिनों से:- सभी आये हैं। तो आपस में बैठे हैं! आपने अपना प्लैन बना दिया है? (अभी बनायेंगे) तो पहले बनाओ फिर बापदादा देखेंगे कि क्या-क्या हो सकता है और फिर इस सेवा को, जैसे इतना टाइम आपने दिया ना, तो इतना टाइम सभी को निकालना ही पड़ेगा क्योंकि वह रिपीट तो करेंगे ना। उसमें भी बहुत करके एम रखो सर्विस जो मुख्य है वह बता दो फिर डबल बारी नहीं बैठें। जो सर्विसएबुल हैं जो सर्विस के लिए सोचते हैं, आये भी सर्विस के प्लैन के लिए हैं। तो जितना सर्विस के ऊपर अटेन्शन देना है उतना सर्विस का फायदा उठा सकें। आपस में बैठकर कोई नवीनता निकालो। यह सब जो चलता है उसको थोड़ा ठीक करो और कोई नवीनता निकालो।

जर्मनी में रिट्रीट सेन्टर मिला है, सुदेश बहन बाबा को उसका नक्शा दिखा रही हैं:- भले सभी देखो, फिर फाइनल करो।

(न्युयार्क की मोहिनी बहन ने सभी की याद बापदादा को दी, मोहिनी बहन की प्लैटिनम जुबिली है, बापदादा उन्हें हार पहना रहे हैं।)

बैंगलोर की सरला दादी बापदादा को गुलदस्ता दे रही हैं:- तबियत ठीक है। अच्छा है।

(आज बापदादा शान्तिवन में पधारे लेकिन बच्चों को भविष्य राजधानी दिल्ली की सैर कराई, इसलिए दिल्ली के स्थानों को बार-बार याद किया)

ओम् शान्ति 15-11-16 ''अव्यक्त-बापदादा'' मधुबन

ओम् शान्ति। देखो, कितने समय के बाद इतने अन्दाज में भाई बहनें यहाँ तक मिलने आ रहे हैं। बाप से मिलने के लिए कहाँ कोई भी बातें हों तो भी यहाँ ही आना पड़े। और कितने सब साधन अपने साथ लेकर कितने प्यार से मिलने आते हैं। बापदादा भी एक एक रत्न को देख खुश होते हैं, जो इतना दूर से मिलने आते हैं, बाप भी मिलने आते हैं, बच्चे भी मिलने आते हैं। यहाँ कुछ भी बहाना वा इतराज नहीं है, बाप भी आते हैं, बच्चे भी आते हैं और दोनों के मन में कितना स्नेह, कितना मन में उमंगें हैं, जो सदा उड़ते रहते हैं। हर एक अपने मन से भी पूछ सकते हैं क्योंकि हर एक के मन में यह उमंग जरूर है कि साकार में बाबा इतना दूर से आता है, बाबा भी दूर से आता है, बच्चे भी दूर से आते हैं। यह मिलन भी एक और रौनक में ले आता है। हर एक के मन में उमंग कितना है, कहाँ जा रहे हैं! बाबा से मिलने। बाबा से मिलना तो अच्छा लेकिन कहाँ से कहाँ आकरके पहुंचते हैं, यही हर एक देखता रहता है। (आज बाबा ने सबको अपनी भविष्य राजधानी दिल्ली की सैर कराई) आज बाबा से मिले लेकिन दिल्ली में मिले। और दिल्ली वाले अपना कितना बड़ा भाग्य समझते हैं कि भगवान हमारे लिए आये हैं। पहले इतना मेला कभी लगा नहीं, जैसे अभी बाबा और बच्चे कहाँ मिल रहे हैं। पता है ना? कहाँ मिल रहे हो? बापदादा भी कितना खुशी से कहाँ मिलने आये है! दिल्ली में या मधुबन में। सभी कितने भरपूर हो गये हैं। और इस दिन को कितना समय याद किया, कब वह तारीख आयेगी जब बाप और बेटे का मिलन होता है। सब वह दिन याद करते थे। कब आयेगा? आज आ गया। यह मिलन भी विशेष दिन है। सभी के दिल में कितनी खुशी हो रही है कि हम कहाँ आये हैं? दिल्ली में आये हैं! या मधुबन में आये हैं! मधुबन में तो और बात है लेकिन आज दिल्ली में आये हैं। और सब कितने खुश हो रहे हैं जो दूर तक नहीं पहुंच सकते, उन्हों के लिए तो जैसे स्वर्ग में जा रहे हैं, कितनी खुशी की बात है। हर एक के दिल से पूछो, अभी आप पहुंच गये हो। कितना दिन भी सुहाना है और सुहाने में सुहाना हमारा बाबा है। दिल्ली में पहुंचे हैं! दिल्ली में राज्य तो करना है लेकिन पहले दिल्ली में सेवा भी करनी है। और बाबा से मिलना भी है। देखो कईयों के लिए तो बाबा से मिलना बहुत दूर है। बाप को भी रहा नहीं जाता। अच्छा यह भी मजा ले लें। बच्चे भी बहुत होशियार है। लेकिन बाबा जब देखते हैं कि बच्चों का प्यार सब तरफ से है। बाप भी सोचते हैं बच्चे सब देख लें। और बाप भी समझते हैं, अभी आबू में रहे हुए हैं तो आबू में क्या क्या देखेंगे। जो थोड़ा था वह तो देख लिया। अभी क्या देखेंगे! इसलिए यह प्रोग्राम बनाया जो यह पास में मशहूर स्थान है, जैसे जयपुर है। ऐसे भी मुख्य स्थान यहाँ के देख लेवें। आपको भी पसन्द है ना। मुख्य स्थान जो हैं ना, वह देख लेवें। तो बाबा को बच्चों को घुमाना तो है ना।

दिल्ली तो हमारे राज्य में नम्बरवन है। दिल्ली पर राज्य करेंगे ना। आपका राज्य कहाँ होगा? दिल्ली में राज्य करेंगे ना! आपके लिए राज्य तैयार हो रहा है। सभी खुशी-खुशी से देखो पहुंच गये हो। और बाप को भी खुशी होती है कि इन्हों को राज्य तो वहाँ ही करना है। राज्य करेंगे ना आप दिल्ली में।
(राज्य दिल्ली में करेंगे तपस्या शान्तिवन में करेंगे) सभी की बहुत समय से यह दिल थी कि हम अपनी

राजधानी को भी तो देखें कि कहाँ राज्य करेंगे! राज्य तो आप ही करेंगे ना। तो अभी से देख लो कोई भी एडीशन करनी है, तो बाबा को बता दो कि यह थोड़ा कम दिखाई देता है। बाबा भी खुश होता है बच्चे जिसमें खुश होते हैं। अच्छा है। जब बच्चे खुली दिल से कहते हैं, नहीं बाबा यह स्थान जरूर देखेंगे तो बाप भी ले जाता है। कुछ लोगों को थोड़ा थकावट या कुछ भी होता है लेकिन उनको 5 मिनट कोई योगी बच्चे या बच्ची को मिलाके उनको लक्ष्य देकर उनमें ताकत भरते हैं, जो बीच से निकल नहीं जायें। जितने निकले हैं उतने तो पहुंचें ना।

आप लोग भी कहाँ राज्य करेंगे। दिल्ली मुख्य है ना। आता है ना यहाँ हम राज्य करेंगे। हमारा राज्य तैयार हो रहा है। यह सब किसलिए हो रहा है? प्रकृति भी हमारे लिए तैयार हो रही है। बाप भी देख रहे हैं कि प्रकृति भी इन्हों की बहुत मददगार बनी है क्योंकि बापदादा देखते हैं कि यह बच्चे तो अच्छी मेहनत करते हैं। मदद करने में, समझाने में सभी मेहनत अच्छी कर रहे हैं। और सब खुश हैं और यह चक्र लगाने में खुश हैं। हैं खुश? जो खुश हैं वह हाथ उठावें। हाथ तो उठा रहे हैं। कितना भी कहो लेकिन बापदादा भी साथ है, यह वन्डरफुल बात है। बाप को भी मजा आ रहा है बच्चों के साथ। तो बच्चे भी खुश हो रहे हैं, वैसे तो इतने रह नहीं सकते हैं लेकिन अभी जब बापदादा ने प्रोग्राम बनाया है तो हर एक हर स्थान देख लेवे। राजधानी देखने की खुशी तो होती हैं ना। यहाँ राज्य करेंगे और मुख्य राजधानी देख ली तो सब देख लिया। बाबा जानते हैं कि सब चक्र लगाने चाहते हैं लेकिन थोड़ा सबको बीच में आराम भी देते हैं, जिससे वह थकावट के कारण ऐसे इतना नहीं चक्र लगा सकते। लेकिन देखना ही है तो अपनी रूचि से, अपनी दिल से चक्र लगाने में थकावट कम होती है।

आप सब दिल्ली में राज्य करने वाले हैं, वह तो भाषण वगैरा करने आते हैं उससे आपने देख लिया कि क्या क्वालिटी है। सबको अच्छा लगा! जहाँ आप राज्य करेंगे वह एडवांस में देख लिया। देखा? अच्छा लगा? अच्छा।

सेवा का टर्न कर्नाटक और इन्दौर जोन का है:- बापदादा भी खुश है। सभी प्यार से अपनी राजधानी तैयार कर रहे हैं, कुछ किया हुआ है, कुछ कर रहे हैं। आप अच्छी तरह से देख लो आपके राज्य में क्या क्या होगा! और जो खास मिस हो तो बता सकते हो। पसन्द है दिल्ली? क्योंकि पीछे भी तो राज्य करना है ना, वह भी दिल्ली में ही करना है। इतना टाइम से बैठे हैं तो थक गये होंगे। सब तीन मिनट बैठो और विदाई लो।

ग्लोबल हॉस्पिटल की सिल्वर जुबली ईयर चल रहा है:- बहुत अच्छा। अभी क्या करना है?

40 देशों से 400 डबल विदेशी आये हैं:- सभी ने माउण्ट आबू तो देखा है ना। लेकिन आप लोग जो सुनते हो ना, आज यह हाल में प्रोग्राम चल रहा है, तो अभी तो आपके सामने वह देखा हुआ आता है, देख चुके हैं, वह सामने आ जाता है। तो देखने से मजा भी आता है। अभी प्रोग्राम हुआ नहीं है, होना है। लेकिन है यही हाल जहाँ सब आफीशियल प्रोग्राम चलने हैं।

(मुन्नी बहन ने बापदादा को कहा मोहिनी बहन बहुत याद आती है, वह कहाँ है।)

अभी वह सेवा कर रही है। अच्छा।

"सभी की दिल तस्वीर में पहले अव्यक्त मिलन की यादें समाई हुई हैं, सभी के मुख में, दिल में है मेरा बाबा, मीठा बाबा, प्यारा बाबा"

ओम् शान्ति। आज के दिन ब्रह्मा बाबा की याद ज्यादा आती है। यही दिन है जो अव्यक्त रूप में बापदादा के मिलन का सूक्ष्मवतन में पार्ट चला था और सभी की सूरत में बापदादा की मूर्त स्पष्ट प्रत्यक्ष हुई थी। सभी के मुख से एक ही शब्द निकला हमारा बाबा, हमारा बाबा हमसे मिल रहे हैं। वही दिन था जो आप सभी बच्चे अव्यक्त रूप में मिल रहे थे, जैसे अभी आप सब बाबा से मिल रहे हैं, तो यही दिन था पहला दिन, जो अव्यक्त रूप में बाप बच्चों से मिला था। हर एक के मन में वह दिन जिसको कहते हैं अव्यक्त मिलन, अव्यक्त रूप का मिलन भी हुआ और अव्यक्त रूप में बाबा के नयनों में अव्यक्त मिलन का पहला दिवस था। सभी के दिल में अव्यक्त मिलन का यह नज़ारा देखा और सबने अव्यक्त मिलन का दिवस मनाया। हर दिन की लीला अपनी अपनी है। तो यह अव्यक्त दिन दिल को बहुत प्यारा लगा है। व्यक्त देश में होते भी अव्यक्त मिलन, अव्यक्त दिवस, अव्यक्त नज़ारे चारों ओर सभी के नयनों में थे। ऐसा अव्यक्त मिलन सभा में, अव्यक्त रूप में बाप और बच्चों का मिलन दिवस मनाया जा रहा था। सभी के मुख से बाबा ओ बाबा, मीठा बाबा, साकार में भी अव्यक्त रूप को देखा और यह अव्यक्त दिवस मैजारिटी उसी स्नेह में उसी रूप में मना रहे थे। सभी के दिल में यह अव्यक्त मिलन, साकार रूप का मिलन, यह मधुर मिलन दिल को आकर्षित कर रहा था। जो साकार में मिलते थे, उन्हें अभी वही मिलन अव्यक्त मिलन बड़ा मधुर अनुभव याद दिला रहा था, मेरा बाबा, मीठा बाबा... याद है ना वह मिलन! कौन आये थे, पहले दिन? इतनी सभा से कौन आये थे मिलन मनाने, हाथ उठाओ।

देखो, वह मिलन का दिन बड़े दिल से मनाया था। तो जब मना रहे थे उस समय सब वेट कर रहे थे तो अभी अभी साकार में बापदादा मिलन मना रहे थे और अभी अभी अव्यक्त ब्रह्मा के रूप में मिलन मना रहे हैं। सब वह दिन याद कर रहे थे, वह अव्यक्त बाबा का पहला दिन था, सभी के नयन मिलन डे पहला दिन मना रहे थे। जैसे आज अव्यक्त मिलन मना रहे हैं, ऐसे ही अव्यक्त दिवस मना रहे थे। हर एक मन में अव्यक्त मिलन की खुशियां मना रहे थे। सभी की दिल तस्वीर के अन्दर आटोमेटिक वह दिन याद आ रहा है। बच्चों को बाबा, बाबा को बच्चे किस रूप में मिले होंगे? उसी दिन की याद आ रही है, जो आगे आगे बच्चे बैठे थे, वह उसी दिनों को याद कर रहे थे कि बाप और बच्चों का प्रत्यक्ष मिलन याद होगा कि कैसे वतन में यह पहला दिन का मिलन था। वैसे तो कुछ समय का मिलन था और सभी की शक्लें ऐसे थी जैसे यह दिन हमको सदा ही याद दिलायेगा, तो सभी ने यह दिन मिलन का दिन मनाया! बस सबके दिल में मेरा बाबा, मेरा बाबा, मेरा बाबा, नयन चमक रहे हैं। आप सब जो यहाँ बैठे हो दो दो नयन आप हर एक के हैं, कोई कोई होंगे जो बिचारे देख नहीं सकते होंगे लेकिन बाप भी बच्चों को देख रहे थे और बच्चे भी बाबा को देख रहे थे, दोनों के मुख से मेरा बाबा, मेरा बाबा, मेरा बाबा निकल रहा था। आप सोचो, उस समय का मिलन क्या नहीं होगा। वह दिन भूलना भी मुश्किल है। वह दिन भी याद करते हैं तो याद आता है, वह दिन याद रहता है खास, क्योंकि पहला दिन था जो निराकार से साकार, साकार से सूक्ष्म ब्रह्मा के रूप में बाबा सभी बच्चों से मिल रहे थे। वह सीन तो सभी को याद है ना। आंखों का पानी, आंखें वह दिन याद दिला रही थी। सबकी दिल कहती थी कि यह दिन जो हैं यह बहुत याद के खास दिन हैं। और जिस समय वह अव्यक्त मिलन बच्चे बाप से मना रहे थे, तो सोचो सारी सभा का क्या हाल होगा! सभी उस दिन की याद में ही चले गये। ऐसे सब याद में खोये हुए थे वह दिन भी सभी को याद होंगे, जो

आये होंगे उन्हों को तो बहुत याद होगा, वह याद बहुत ही गहरी थी। सभी के नयन गंगा जमुना नदी बन रहे थे। तो यह दिन विशेष है, सभी ने सोचा पता नहीं कैसे हम रहेंगे! बाबा तो जानता था, बाबा बोले, यह प्यारा दिन है, रोने का दिन नहीं है। प्यार का स्वरूप क्या होता है, वह दिखाने के दृश्य दिखा रहा था। तो सभी ने अपने दिल का प्यार प्रकट किया। अच्छा।

सेवा का टर्न दिल्ली और आगरा का है, 15 हजार वहाँ से आये हैं, टोटल 22 हजार हैं:- अच्छा है, जो अभी आये हैं मिलने के लिए, वह सब खड़े रहें, बाकी बैठे। अच्छा है, बापदादा ने यह खास हाथ इसीलिए उठवाया, कि जितने भी आये हैं इन्होंने मिलन तो मनाया। मनाया ना सभी ने मिलन! और मिलन ने आपको होमवर्क भी दिया। क्या हमको करना है आगे, वह भी सुनाया। तो देखो, बाबा को कितना बच्चों का शुभ दिन याद रहता है। भूलता तो किसको भी नहीं है, भिन्न-भिन्न रूप से मनाते रहते हैं लेकिन हम और बाबा हर दिन की विशेषता भूल नहीं सकते। हर दिन की विशेषता याद दिलाती है और भिन्न-भिन्न समय पर जो लीला चली है, वह दिव्य लीला कभी कोई लीला, कभी कोई लीला सभी ने देखी होगी।

डबल विदेशी, 30 देशों से 300 भाई बहिनें आये हैं:- सभी नजदीक आ गये। बाबा को कितने बच्चे याद रहते हैं। हर बच्चा समय-समय पर आते हैं परन्तु जो याद आते हैं और पहुंच जाते हैं उन्हों का खेल भी अजीब है। आते हैं और मिल करके अपने दिल की बातें दिलाराम के आगे रखते हैं और फिर चले जाते हैं लेकिन वह बातें जिगरी दिल की बाते हैं ना! तो सारी सभा का वायुमण्डल, हाल का वायुमण्डल याद की दीवारों से सज़े हुए नज़र आते हैं। सारी दीवारों पर ''मेरा बाबा, मीठा बाबा, प्यारा बाबा'' यही लिखा हुआ है, बहुत अच्छी डिज़ाइन से लिखा हुआ नज़र आ रहा है। आपको नज़र आया? आया ना! जिसको वह नज़र आ रहा है वह हाथ उठाओ। तो आप भी अपने प्यार की निशानियां, जो देखा वह यादगार बन गया। यादगार दिन सदैव याद नहीं करना पड़ता है लेकिन वह दिन ही यादगार बन गये हैं।

दादियों से:- सभा देखी। (बाबा देखा) बाबा देखा तो सब कुछ देख लिया। सभी के दिल में प्यार के झूले में झुला दिया। सभी की शक्लें देखो अभी सभी झूल रहे हैं ना। सभी कहाँ बैठे हैं! सभी झूले में बैठे हैं, झूले में। सभी बाबा बाबा दिल ही दिल में कह रहे हैं, नहीं तो घमसान हो जाए। अभी सभी की दिल में क्या चल रहा है! बाबा, बाबा, बाबा। अच्छा है ना। बाबा भी बच्चों का प्यार देखकर खुश होता है कि कितना प्यार इन्हों के दिल में है और कितने दिल से वर्णन करते हैं। देखो बापदादा की दिल क्या कहती है! बतायें, तुम नहीं सुनाओ तो बाप बताते हैं। हर एक की शक्ल बोलती है। वैसे तो दूर दूर हैं, नहीं समझ सकें लेकिन हर एक दिल में बोलते हैं, दिल की बातें वह बापदादा के पास पहले पहुंचती हैं। सभी की शक्लें जो हैं ना, वह फोटोग्राफर अपने छोटे उसमें (कैमरे में) बंद कर लेता है। और देखो, कोई कोई का फेस मुरझाया हुआ होता, पता नहीं क्या क्या सोचते हैं, लेकिन बाबा को वह बच्चे देखने में आते हैं जो सदा ही हर्षित रहते हैं। बस दिल में सदा ही कोई न कोई तस्वीर मिलने की रहती ही है। जैसे आप लोग रखते हैं ना कि खास यह मिलन डे है।

(रतनमोहिनी दादी से से) तबियत ठीक हो रही है ना।

जब यह सोचेंगे ना, बाबा हमको मिल रहा है तो आपको फीलिंग आयेगी कि बाप मिल रहा है। बाप सूक्ष्म में तो दूर है लेकिन सूक्ष्म में बापदादा की सूरत दिल में समाई हुई है। दिल में तो हर एक समा सकता है ना। कुछ भी हो, आंधी हो, तूफान हो, क्या भी हो लेकिन दिल की मुलाकात, दिल का हालचाल, दिल का भोजन सब बहुत प्यार से स्वीकार होता है। सब खुश होते हैं। अच्छा।

अव्यक्ति मिलन के लिए अव्यक्त स्थिति बनाने की विधियां

1. अपनी अव्यक्त स्थिति बनाने के लिए हर आत्मा के प्रति शुभ भावना और श्रेष्ठ भाव को धारण करने का विशेष अटेन्शन रखो। अशुभ भाव को अपने शुभ भाव से परिवर्तन कर दो और अशुभ भावना को शुभ भावना से परिवर्तन कर दो।

2. अव्यक्त का अर्थ ही है व्यक्त भाव और व्यक्त भावना से परे। सर्व के प्रति कल्याण की भावना, सदा स्नेह और सहयोग देने की भावना, हिम्मत-हुल्लास बढ़ाने की भावना, अपनेपन की भावना और आत्मिक स्वरूप की भावना। ऐसी सद्भावना रखना ही अव्यक्त स्थिति बनाने का आधार है।

3. अपने हर संकल्प को हर कार्य को अव्यक्त बल से अव्यक्त रूप द्वारा वेरीफाय कराओ। बापदादा को अव्यक्त रूप से सदा सम्मुख और साथ रखकर हर संकल्प, हर कार्य करो। यह ''साथी'' और ''साथ'' का अनुभव बाप समान साक्षी अर्थात् न्यारा और प्यारा बना देगा।

4. अव्यक्त स्थिति में रहना अर्थात् अपनी फरिश्ता स्थिति में स्थित रहना। देह, सम्बन्ध वा पदार्थ का कोई भी लगाव नीचे न लाये। जो वायदा है यह तन, मन, धन सब तेरा तो लगाव क्यों? फरिश्ता बनने के लिए यह प्रैक्टिकल अभ्यास करो कि यह सब सेवा अर्थ है, अमानत है, मैं ट्रस्टी हूँ।

5. अव्यक्त स्थिति का अनुभव करने के लिए ''सोचो कम, कर्तव्य अधिक करो।'' सर्व उलझनों को समाप्त कर उज्वल बनो। पुरानी बातों अथवा पुराने संस्कारों रूपी अस्थियों को सम्पूर्ण स्थिति के सागर में समा दो। पुरानी बातें ऐसे भूल जाओ जैसे पुराने जन्म की बातें भूल जाती हैं।

6. यह बुद्धि रूपी पांव पृथ्वी पर न रहे। जैसे कहावत है कि फरिश्तों के पांव पृथ्वी पर नहीं होते। ऐसे बुद्धि इस देह रूपी पृथ्वी अर्थात् प्रकृति की आकर्षण से परे रहे। प्रकृति को अधीन करने वाले बनो, न कि अधीन होने वाले।

7. अव्यक्त स्थिति का अनुभव करने के लिए अपने लगाव की रस्सियों को चेक करो। बुद्धि कहीं कच्चे धागों में भी अटकी हुई तो नहीं है? कोई सूक्ष्म बंधन भी न हो, अपनी देह से भी लगाव न हो, ऐसे स्वतन्त्र अर्थात् स्पष्ट बनने के लिए बेहद के वैरागी बनो तब अव्यक्त स्थिति में स्थित रह सकेंगे।

8. सम्पूर्ण फरिश्ता वा अव्यक्त फरिश्ता की डिग्री लेने के लिए सर्व गुणों में फुल बनो। नॉलेजफुल के साथ-साथ फेथफुल, पॉवरफुल, सक्सेसफुल बनो। अभी नाज़ुक समय में नाज़ों से चलना छोड़ विकर्मों और व्यर्थ कर्मों को अपने विकराल रूप (शक्ति रूप) से समाप्त करो।

9. अभ्यास करो कि इस स्थूल देह में प्रवेश कर कर्मेन्द्रियों से कार्य कर रहे हैं। जब चाहे प्रवेश करो और जब चाहे न्यारे हो जाओ। एक सेकेण्ड में धारण करो और एक सेकेण्ड में देह के भान को छोड़ देही बन जाओ।

10. अमृतवेले उठने से लेकर हर कर्म, हर संकल्प और हर वाणी में रेग्युलर बनो। एक भी बोल ऐसा न निकले जो व्यर्थ हो। जैसे बड़े आदमियों के बोलने के शब्द फिक्स होते हैं, ऐसे आपके बोल फिक्स हों।

11. बीच बीच में संकल्पों की ट्रैफिक को स्टॉप करने का अभ्यास करो। एक मिनट के लिए संकल्पों को, चाहे शरीर द्वारा चलते हुए कर्म को रोककर बिन्दू रूप की प्रैक्टिस करो। यह एक सेकेण्ड का भी अनुभव सारा दिन अव्यक्त स्थिति बनाने में मदद करेगा।

12. जो संकल्पों को कन्ट्रोल करना जानते हैं वो अव्यक्त स्थिति को ज्यादा बढ़ा सकते हैं। व्यर्थ के साथ शुद्ध संकल्पों को भी कन्ट्रोल करने की शक्ति होनी चाहिए। पुरुषार्थ की लाइन में अगर कोई रूकावट है तो उसको मिटाकर लाइन क्लीयर करना – इस साधन से ही अव्यक्त स्थिति की प्राप्ति होती है।

13. जैसे बाप अव्यक्त है ऐसे सदा व्यक्त भाव से परे, अव्यक्त देश की स्मृति से उपराम अर्थात् साक्षी बनने से ही हर समय साथ का अनुभव कर पायेंगे। साक्षी अवस्था की स्थिति में स्थित होने वा अशरीरी आत्मा समझने से ही शक्ति मिलती है।

14. अव्यक्त स्थिति को बढ़ाने के लिए एकान्त में रूचि रखनी है। एकता के साथ एकांतप्रिय बनना है। एकान्त एक तो स्थूल होती है, दूसरी सूक्ष्म भी होती है। एकान्त के आनन्द के अनुभवी बन जाओ तो बाह्यमुखता अच्छी नहीं लगेगी।

15. अन्तर्मुखी, एकान्तवासी बनने के अभ्यास के लक्ष्य को लेकर अपने दिल की लगन से बीच-बीच में समय निकालो। जितना अव्यक्त स्थिति में स्थित होते जायेंगे उतना बोलना कम होता जायेगा। कम बोलने से ज्यादा लाभ होगा फिर इस योग की शक्ति से सर्विस स्वत: होगी।

16. जैसे ब्रह्मा बाप साधारण तन में होते भी पुरुषोत्तम अनुभव होता था। अभी अव्यक्त रूप में भी साधारण में पुरुषोत्तम की झलक है, तो फालो फादर। काम भले कोई साधारण हो लेकिन स्थिति महान् हो। चेहरे पर वो श्रेष्ठ जीवन का प्रभाव हो तब इस चेहरे रूपी दर्पण से आपकी स्थिति को देख सकेंगे।

17. अभी-अभी आवाज़ में आते, डिस्कस करते, कैसे भी वातावरण में संकल्प करो और आवाज से परे, न्यारी फरिश्ता स्थिति में टिक जाओ। अभी-अभी कर्मयोगी, अभी-अभी फरिश्ता अर्थात् आवाज़ से परे अव्यक्त स्थिति। लास्ट समय जब चारों ओर व्यक्तियों का, प्रकृति का आवाज़ होगा - चिल्लाने का, हिलाने का - यही वायुमण्डल होगा। ऐसे समय पर सेकेण्ड में अव्यक्त फरिश्ता सो निराकारी अशरीरी आत्मा हूँ - यह अभ्यास ही विजयी बनायेगा।

18. जैसे बापदादा व्यक्त में आते हैं तो भी अव्यक्त रूप के अव्यक्त देश की अव्यक्ति प्रवाह में रहते हैं। वही बच्चों को अनुभव कराते हैं तो आप भी अपने अव्यक्त स्थिति का अनुभव औरों को कराओ। अव्यक्त स्थिति में स्थित रहकर व्यक्त भाव में आओ। शरीर में होते हुए भी ऐसी उपराम अवस्था तक पहुँचना है जो देह और देही बिल्कुल अलग महसूस हो। यही योग की प्रैक्टिकल सिद्धि है। बात करते-करते जैसे न्यारापन खींचे, बात सुनते भी जैसे कि सुनते नहीं, ऐसी भासना औरों को भी आये।

"दिलवाला एक है, दिलवाले अनेक हैं, सबके दिल में मेरा बाबा समाया हुआ है, इसी सुखमय जीवन में मजा है, कुछ भी हो इशारा मिलते ही एकरस अवस्था में स्थित होने की प्रैक्टिस करो, आर्डर प्रमाण अतीन्द्रिय सुख में समा जाओ"

ओम् शान्ति। सभी के मन अन्दर कौन समाया हुआ है? सारी सभा में इतने होते हुए भी सभी एक ही बाप की तरफ कितने प्यार से दृष्टि ले रहे हैं। हर एक की दृष्टि में बाप और बाप के बच्चे अति स्नेह रूप से समाये हुए हैं। सभी की दिल एक ही बात कह रही है मेरा बाबा, मेरा बाबा बस। सभी कितने प्यार से अपनी याद दे रहे हैं। भले कितने भी बैठे हैं, कहाँ भी बैठे हैं लेकिन सबके दिल में एक ही याद है, वह क्या! मेरा बाबा। सभी की दिल में क्या है? बस मेरा बाबा। सबके दिल में बाबू के प्यार के गीत कहो, कविता कहो समाया हुआ है। सबकी दिल में एक ही गीत बज रहा है वाह मेरे दिल का बाबा। बाबा और मैं, सबके दिल में यही है ना! मैं और मेरा बाबा। दो होते भी एक हैं। हर एक के दिल में यह एक ही बाबा समाया हुआ है। हर एक अपने आप से पूछो मेरे दिल में कौन? कमाल तो यही है कि दिल अनेक हैं लेकिन समाया हुआ एक ही है। हाथ उठाओ आपके दिल में कौन? कितनी दिल वाले हैं लेकिन सभी की दिल में समाया एक ही है। यही कमाल है। सभी की दिल में एक है, यह एक इतना प्यारा है जो कितना भी भुलाने की कोशिश करते तो भी भूलता नहीं है। याद बढ़ती ही जाती है। यही कमाल है जो इतनी सारी सभा क्या कहेगी! मेरा बाबा। सबके दिल में एक की ही याद है, मेरा बाबा, मीठा बाबा, प्यारा बाबा। और इसमें प्यार कितना समाया हुआ है। सभी के दिल में एक ही बाबा समाया हुआ है। कितने बैठे हैं! लेकिन दिल में समाया हुआ एक ही है। और सब कोई जानते हैं कि इनके दिल में इस समय कौन है? मैजारिटी दिल में समाया हुआ वह एक ही है। भले अनेक बैठे हैं लेकिन यह सभा वह है जिसके दिल में एक ही बाबा समाया हुआ है। सबके दिल में कौन? मेरा बाबा। और बाबा कितना प्यारा है? भले इतने लोग हैं लेकिन मैजारिटी सबके दिल में बाबा ही समाया हुआ है। मेरा बाबा, दिल में ऐसा समाया हुआ है जो दिल से निकलना भी मुश्किल है। सभी प्यार से क्या कहते हैं, अगर एक दो में मिलते हैं तो क्या कहते हैं! मेरा बाबा कैसा है, मेरा बाबा क्या कर रहा है! मेरा बाबा, मेरा बाबा। गीत भी है ना - गायेंगे गीत, तो वह एक ही होगा। तो अभी यहाँ बैठे हुए इतने लोगों के बीच में अगर हाथ उठायें तो सबके दिल में कौन है! सब कहेंगे बाबा, मेरा बाबा। सब ऐसे सीधा हाथ उठाओ। सबका लम्बा हाथ कितना मजेदार लगता है। बाहर गाते नहीं हैं, क्योंकि बाहर गायेंगे ना, तो गाने में फर्क पड़ जाता है। बाकी दिल में सबके एक ही है। सबकी दिल क्या कहती है? मेरा बाबा, मेरा बाबा। और सभी एक बाबा को याद करके बहुत खुश हो रहे हैं। देखो, सबकी शक्लें देखो। सबकी दिल एक ही गीत गा रही है मेरा बाबा, मीठा बाबा। इतने सब दिल होते सबके दिल में कौन? मेरा बाबा। और मजा कितना आता है, कुछ भी हो लेकिन हमारे दिल में मेरा बाबा, मेरा बाबा। ऐसे सदा मेरा बाबा मेरे दिल में है, यही देख सब खुश होते हैं। सारी सभा इतनी बैठी है लेकिन सबके दिल में एक ही है, ऐसे है ना! दिल में सबके क्या होगा? बाबा। एक ही दिल में है। आप भी कहेंगे मेरा बाबा, वह भी कहेगा मेरा बाबा, वह भी कहेगा मेरा बाबा। कितना मस्त है। तो सदा ही ऐसे दिल में बाबा है ही है। कोई भी देखे तो क्या दिखाई देवे, मेरा बाबा बैठा है। चारों ओर देखे तो कौन बैठा है! मेरे अन्दर बाबा बैठा है, मेरा बाबा।

बाबा हमेशा कहते हैं बस मेरा बाबा ऐसा छिपाकर रखो जो कोई निकाल ही नहीं सकता। सबकी शक्लें देखो, अभी जो बैठे हैं मेरा बाबा बस यही दिल में हैं, तो देखो सबकी शक्लें कैसी हैं! मुस्कराती हुई हैं। कितना अन्दर ही अन्दर खुशी में नाच रहे हैं। मेरा बाबा, मेरा आ गया ना, मेरे दिल का बाबा है। कहने में भी कितना मीठा लगता है! मेरा बाबा। तो ऐसे ही सदा दिल में कुछ भी करो लेकिन मेरा बाबा नहीं भूले। सभी की दिल के

अन्दर एक ही है। भले कोई-कोई को न भी हो लेकिन वास्तव में यह सभा कौन सी है! दिल में दिलाराम। सबकी दिल देखो तो क्या है? दिलाराम। ऐसे ही बाबा चाहता है कुछ भी करो मेरा बाबा यह दिल में समाया हुआ हो। सभी की दिल में क्या है? सारी सभा के दिल में अभी क्या होगा! मीठा बाबा। ऐसी सभा जो दिल में एक ही दिलाराम हो। दिलाराम एक, दिलवाले कितने हैं। सबके दिल में एक बाबा ही छाया हुआ है, कितना भी कोई कहे ना। नहीं, दिल में और कुछ है, तो वह ठहर नहीं सकते। मेरा बाबा। कितना मजा है सबके दिल में एक ही है। वायुमण्डल देखो कितना सुखमय, अतीन्द्रिय सुख की सभा देखनी हो तो देखो। अगर कुछ भी हो तो सबकी दिल बोलेगी वाह बाबा वाह! सबकी दिल में कौन! और मजा तो यह है जो इतने होते हुए भी, भले बीच में कोई और भी हो सकता है लेकिन मैजारिटी इस समय जब बाबा, बाबा कह रहे हैं तो एक ही बाबा सभी की दिल में है। और मजा कितना आता है इसमें! ऐसे इस सभा के अन्दर से वायब्रेशन क्या लगता है? एक ही बाबा की याद है। तो सभी से पूछेंगे आपकी दिल में कौन! सब कहेंगे मेरा बाबा। तो मजा है ना! सभा एक लेकिन है एक में एक, एक ही सभा है, एक ही जादूगर है। सभी की दिल क्या गा रही है! वाह मेरा बाबा वाह! बोलो अभी। तो रोज़ सुबह को जब तैयार होकर जाते हो, वैसे तो सब काम करते हुए भी बाबा ही याद है तो भी अगर तैयार होके याद में काम करने या कुछ भी करने जाते हो तो मजा कितना आता है। ऐसा कोई है जो आज अभी, सतयुग में नहीं अभी, बाबा याद नहीं हो। वह है कोई, जो बाबा की याद में मेहनत कर रहे हैं, है कोई? हाथ उठाओ। देखो कितनी अच्छी सभा लगती है। सारी सभा देखो आके कितनी अच्छी लगती है। और मजा है याद करने में और क्या है! मजा ही है ना! और चाहिए क्या हमको। अगर कोई भी पूछे, तुम्हारे मन में क्या है? तो क्या कहेंगे, बाबा। बाबा को दिल दे दिया है। जब भी याद करो तब मेरा बाबा। तो एक की याद में मजा आता है ना! मजा आता है? क्योंकि एक की याद है ना, बहुत हैं ही नहीं जो कहे पता नहीं याद आये न आये। एक बाबा है। और इस याद से क्या नहीं मिलता है? जिसको जो चाहिए, खुशी चाहिए, या रमत-गमत चाहिए, सबके दिल में खुशी की लहर क्योंकि अभी हमारा टाइम ही है खुशी की याद। तो एक सेकण्ड में खुशी आई! कि मेहनत लगती है? इतनी मेहनत नहीं जितनी मुहब्बत है। हर एक अपनी-अपनी मौज में बैठा है। तो लाइफ है तो यह, जिसमें एक की ही याद है, एक ही मनमनाभव! अभी बाबा को ही याद करो और सब भूल जाओ, तो सेकण्ड में सब करेंगे ना। मेहनत है क्या। बाबा कहे अभी ओम् शान्ति। तो क्या आप सभी एक सेकण्ड में ओम् शान्ति स्वरूप में टिक सकते हो? हाँ कहो या ना! मजा तब है जब एक सेकण्ड में कहा तो एक सेकेण्ड में ही यहाँ वहाँ से हाँ का रेसपान्ड आवे। अगर यहाँ कोई-कोई में नहीं आवे, कोई-कोई का आवे। वह भी ठीक नहीं। जब बाबा ने कहा मनमनाभव तो सब मनमनाभव हो जाने चाहिए। यह हो सकता है ना! बाबा सिर्फ कहे चलो सभी अपने याद की यात्रा में तो सेकण्ड में सब पहुंच जायें। आप सभी जो बैठे हैं तो क्या एक सेकण्ड में बाबा की याद में बैठ सकते हैं ना! और मजा कितना है सब एक ही की याद में। कितनी सुखदाई जीवन है, वाह! जो समझते हैं हमारी अभी की अवस्था सुखमय है वह हाथ उठाओ। अच्छा। देखो, आगे पीछे सभी अपने फेस को देखो, क्या है! सब प्रेम में, याद में समाये हुए हैं। यह अवस्था भले कितना भी टाइम कहो, हो सकता है, लेकिन प्रैक्टिस चाहिए। अभी सभी के लिए कहते हैं एक सेकण्ड नहीं, एक मिनट में सभी इसी नशे में वाह मेरी अतीन्द्रिय सुखमय जीवन, अगर ऐसे बाबा कहे तो एक सेकण्ड में हर एक अपनी ऐसी अवस्था बना सकते हैं? हाथ उठाओ। सभी अपना सीधा हाथ उठाओ, यहाँ आकर देखो सभा कितनी अच्छी लगती है। यह प्रैक्टिस चाहिए। कुछ भी हो, भले कोई दर्द या कोई ऐसी बात होवे तो हमारी शक्ल में फर्क नहीं आवे, मुस्कराते तो रहें। ऐसी प्रैक्टिस होनी चाहिए। आर्डर मिले बस अभी अतीन्द्रिय सुख के अन्दर बैठ जाओ तो बैठ सकते हैं? अभी दो मिनट सभी एक ही रस में बैठे। अतीन्द्रिय सुख इस लहर में बैठकर देखो, कितना मजा आता है। कितना

इस अतीन्द्रिय सुख के झूले में झूलने में सुख है। कोई भी बात हो, कुछ भी सामने आवे लेकिन यह सुख नहीं भूले, यह हो सकता है! होता है। आप कहो हो सकता है नहीं, होता ही है क्योंकि हमारी जीवन है ही क्या! आप अपनी दिल से पूछो दिल में क्या है? आप देखो अपनी दिल में, कोई दु:ख है, कोई अशान्ति है! अगर है तो उसका कारण जो है वह पूछ भी सकते हैं, खत्म कर सकते हैं। तो बाबा कहते हैं मेरे बच्चे, ऐसे कहेंगे ना, मेरे बच्चे और खुश नहीं हो यह तो यह हो नहीं सकता कि मेरे बच्चे मैजारिटी खुश होंगे। अभी मैजारिटी सच्ची बताओ अन्दर में कोई घुटका तो नहीं है! क्योंकि हमारी जीवन क्या है। अगर परिचय दो तो क्या देंगे। सुख शान्ति आनंद प्रेम यह है हमारी जीवन। ऐसे है? कभी भी देखो आपको तो यह नहीं हो कि अभी यह मेरी जीवन नहीं है, क्यों दूसरी जीवन आई क्यों। जब बाबा का हुक्म है, तो अभी इसी में रहना है तो आप छोड़ो क्यों! यह अवस्था जो है सुखमय जीवन यह सदा रहनी चाहिए। तो आप कितने हैं जो समझते हैं तो मैजारिटी ऐसी ही रहती है? वह हाथ उठाओ। अच्छा उठाते तो हैं! पुरुषार्थ करें तो क्या बड़ी बात। जैसे हम अपनी अवस्था को स्थित करें वैसी होगी। आखिर भी मालिक कौन! मालिक तो हम ही हैं ना! सिर्फ इसमें अटेन्शन चाहिए। अटेन्शन यहाँ-वहाँ हो जाता है तो वह भी चक्कर लगा देता है। तो सारे दिन में यह अनुभव करना चाहिए क्योंकि यह अभ्यास बहुत जरूरी है। आखिर भी कोई भी बातें आवें, अपना एकरस की अवस्था का इशारा मिले और उसमें ठहर जायें। यह अभ्यास सारे दिन में, हर एक को अपने रिहर्सल में होना चाहिए। अच्छा - एक घण्टा ऐसी अवस्था में बैठा तो कोई बड़ी बात तो नहीं है, मेरी अवस्था है ना। अगर नहीं बैठते हैं तो हमारी कमी है। अगर इस अवस्था में स्थित रहने की कोशिश करो तो बहुत अच्छी आपकी जिंदगी ऐसे महसूस होगी जैसे सुखमय शैया पर लेटे हुए हो। यह प्रैक्टिस जरूर होनी चाहिए। कुछ भी हो लेकिन मेरी अवस्था मेरे हाथ में होनी चाहिए। तो इतने सभी बैठे हैं, तो कहा उस समय अपनी अवस्था ठहर सकी। यह पुरुषार्थ अपना देखो, या सोचने लगे यह भी बैठा है, यह नहीं बैठा है। अपने हाथ में होना चाहिए। स्थिति में स्थित होना चाहते हैं तो होवे ना। हो नहीं सकें तो इसको क्या कहेंगे? योगी। और धीरे-धीरे अगर यह प्रैक्टिस होती जाए जब चाहे तब इसमें टिक सके। टिकने की कोशिश तो सभी करते ही होंगे सारे दिन में। वह अपनी चेकिंग अपने आपेही करेंगे। सारे दिन में कर सकें तो अपने हाथ में है। अपनी बुद्धि को स्थित करना अपने हाथ में है। और कर सकते हैं। अभी सभी बैठे थे तो अपनी अच्छी अवस्था अनुभव किया? जिसने किया, दिल मानती है वह हाथ उठाओ। अच्छा। हाथ तो सभी ने उठाया है। अच्छा, किसकी थोड़ी होती होगी किसकी ज्यादा होती होगी। लेकिन जितना समय कहें उतना समय होनी चाहिए जरूर। सभी ने ट्रायल की है, यह ट्रायल जरूर करते रहो। कोई भी समय अगर यह अवस्था जिस समय चाहे उस समय बना सके तो उसको योगेश्वर की लाइन में ला सकते हैं। अगर कोई चाहे तो मैं इस समय ऐसे वायुमण्डल में भी जैसी अवस्था मैं चाहूं वैसे हो सकती है, वह हाथ उठाओ। कर सकते हैं? हाथ तो बहुतों ने उठाया है। अच्छा है, अगर ऐसे है जब चाहे तब आधा घण्टा तो बैठ सके। यह अभ्यास बीच-बीच में अपने आपेही करना चाहिए। सिर्फ अटेन्शन थोड़ा देना पड़ता है क्योंकि आखिर भी कन्ट्रोल आफ माइन्ड की स्टेज जो है, उससे थोड़ा आगे-आगे चलते जाना चाहिए। भले इतने सब इकट्ठे बैठे हैं लेकिन इकट्ठे बैठे हुए भी समझो आर्डर मिलता है, आधे घण्टे का, सवा घण्टे का तो जब चाहे जितना चाहे उतना टाइम अपने को कन्ट्रोल कर सके, यह अभ्यास भी जरूरी है। कभी कोई भी अपनी अवस्था हो सकती है लेकिन अवस्था भी हमारी ऐसी हो जो चाहें, जितनी चाहें उतनी हो। भले टाइम तो अभी दिन का है फिर भी अगर ऐसे समय पर कन्ट्रोल करने चाहे तो कन्ट्रोल कर सको, यह प्रैक्टिस भी होनी चाहिए। कर सकते हो, हो सकता है इतना। समझो साधारण रूप में अभी बैठो हो अभी कन्ट्रोल का आर्डर मिलता है। अभी आधा घण्टा आप इस अवस्था में स्थित हो तो कर सकते हो या बार-बार अटेन्शन, अटेन्शन देना पड़े। भले

वह भी होगी लेकिन यह प्रैक्टिस जरूर हो कि जब चाहें तब अपने आपको रोक सकें। ऐसे कौन हैं जो रोकने चाहें तो रुक सकते हैं, वैसे हाथ उठाओ। जो रोकने चाहे तो रोकने चाहें के बाद वह अवस्था रूक सकती है। यह भी प्रैक्टिस होनी चाहिए क्योंकि समय अभी ऐसा आना है, जो आर्डर मिले तो आर्डर को कर सके। आर्डर माना आर्डर। ऐसे नहीं आर्डर अभी मिला और प्रैक्टिकल में आवे उसमें टाइम लगे। यह प्रैक्टिस जरूर होना चाहिए किस समय भी आप दिन में फ्री होते हो और अगर आर्डर करो तो आर्डर होता है। ऐसी अवस्था का पुरुषार्थ होना चाहिए। यह अभ्यास जरूरी है। चलो, 10 मिनट मैने समझा मैं बैठूं, और 5 मिनट बैठ सकते हैं कितना भी हो लेकिन आर्डर मानने में आवे यह जरूरी है। आप समझते हो तो ऐसा अभी हो सकता है? अच्छा।

सेवा का टर्न यू.पी. बनारस, पश्चिम नेपाल का है, 11 हजार यू.पी. से आये हैं, टोटल 23 आये हैं:- सभी ऐसा पुरुषार्थ कर रहे हो, और करते रहना क्योंकि हमारी प्रैक्टिस होगी तो हम दूसरों को कह सकेंगे। नहीं तो कहने में भी हमारे को शर्म आयेगा। तो यह प्रैक्टिस होनी चाहिए। कभी भी कोई समय ऐसा आ सकता है जिसमें हमारे को पेपर देना पड़े तो यह प्रैक्टिस होनी चाहिए। तो सभी खुश हैं? हाथ उठाओ। प्रैक्टिस करते-करते सब सहज हो जायेगा, कोई मुश्किल नहीं। सिर्फ करते रहें। चलो कोई समय ऐसा है जिसमें थोड़ा टाइम मिल सकता है। भले थोड़ा टाइम मिले, प्रैक्टिस चाहिए। ऐसी प्रैक्टिस को नहीं छोड़ना। यह प्रैक्टिस अपने आपको आपेही कराते रहना। यह प्रैक्टिस करो, जितना टाइम चाहें उतना टाइम पूरा करें। अभी तो सारा दिन के थके हुए होंगे, अभी बाबा नहीं कराता है। भले आराम से करना, लेकिन करते रहना। जितना टाइम चाहें उतना टाइम का धीरे-धीरे अभ्यास करते रहो। और हो जायेगा। बाबा का वरदान है।

डबल विदेशी भाई बहिनें 50 देशों से 600 आये हैं:- (छोटे बच्चे गीत गा रहे हैं।) भले जोर से गाओ। (मेरे संग संग चलते बाबा)

दादियों से:- आप समझती हो, हो सकता है? अगर अटेन्शन रखेंगे तो क्या नहीं हो सकता है? सब हो सकता है लेकिन अगर दृढ़ निश्चय है तो। करना ही है। समझो, अभी शुरू नहीं करते हैं, जैसे अचानक ही कहते हैं, आज समझो अचानक कहते हैं कल से थोड़ा एक घण्टा करना, तो कर सकते हैं? जो कर सकते हैं, वह हाथ उठाओ। थोड़े हैं। कोई बात नहीं।

बाबा नया साल है? (निर्वैर भाई को) आप हैपी न्यु ईयर करो तो सब करें। सबने बहुत उमंग-उत्साह से किया, बहुत अच्छा। हैपी न्यु ईयर। (बृजमोहन भाई ने बताया - दादी जानकी जी का 101 वां बर्थ डे है, उनका बर्थ डे कल शाम को धूमधाम से मनाया जायेगा, दादी जी को सबकी तरफ से बहुत-बहुत मुबारक हो।)

(रमेश भाई ट्रामा सेन्टर, शान्तिवन में हैं, बापदादा को उनकी याद दी) रमेश भाई को नये वर्ष की बहुत-बहुत याद देना। डाक्टर्स ने जो ट्रीटमेंट दी हैं वो चालू रखो। बच्चा बापदादा की नज़रों में है। बापदादा शक्ति दे रहे हैं।

(बापदादा ने सभी को नये वर्ष की मुबारक दी)

सभी को नये साल की मुबारक सुनकरके अच्छा लग रहा है ना। सभी अन्दर ही अन्दर खुश हो रहे हैं। सिर्फ क्या है, समय ऐसा है जो सभी को भूख भी लगी होगी, इसलिए जा रहे हैं। नया साल जो अभी शुरू हो रहा है, उसकी आप सबको बहुत-बहुत बधाई हो बधाई। सभी को मुबारक मिली। यह मुबारक सभी सम्भालकर रखना और औरों को भी देना।

(निर्वैर भाई ने कहा यह बधाई जो बापदादा ने हम सबको दी है उसके लिए आप सबकी तरफ से बापदादा को कोटि कोटि धन्यवाद)

दादी ने कहा – बाबा ने आप सबको बहुत बहुत यादप्यार भेजी है। आप सबकी तरफ से हम भी बाबा को मुबारक देंगे।